॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये?

आरतीको 'आरात्रिक' अथवा 'आरार्तिक' और 'नीराजन' भी कहते हैं। पूजाके अन्तमें आरती की जाती है। पूजनमें जो त्रुटि रह जाती है, आरतीसे उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराणमें कहा गया है—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

'पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होनेपर भी नीराजन (आरती) कर लेनेसे उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।'

आरती करनेका ही नहीं, आरती देखनेका भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्तिविलासमें एक श्लोक है—

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्॥

'जो देवदेव चक्रधारी श्रीविष्णुभगवान्‌की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मोंतक ब्राह्मण होकर अन्तमें परमपदको प्राप्त होता है।'

विष्णुधर्मोत्तरमें आया है—

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते।
कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्॥

'जो धूप और आरतीको देखता है और दोनों हाथोंसे आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियोंका उद्धार करता है और भगवान् विष्णुके परमपदको प्राप्त होता है।'

आरतीमें पहले मूलमन्त्र (जिस देवताका जिस मन्त्रसे पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शङ्ख, घड़ियाल आदि महावाद्योंके तथा जय-जयकारके शब्दके साथ शुभ पात्रमें घृतसे या कपूरसे विषम संख्याकी अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये—

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम्।
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः॥
प्रज्वलयेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा।
आरार्तिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्तिकम्॥

साधारणतः पाँच बत्तियोंसे आरती की जाती है, इसे 'पञ्चप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियोंसे आरती की जाती है। कपूरसे भी आरती होती है। पद्मपुराणमें आया है—

कुङ्कुमागुरुकर्पूरघृतचन्दननिर्मिताः ।
वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्त्तिकाम्॥
कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः।

'कुङ्कुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दनकी सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर अथवा दियेकी (रूई और घीकी) बत्तियाँ बनाकर सात बत्तियोंसे शङ्ख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिये।'

आरतीके पाँच अङ्ग होते हैं—

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा॥
चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि॥

'प्रथम दीपमालाके द्वारा, दूसरे जलयुक्त शङ्खसे, तीसरे धुले हुए वस्त्रसे, चौथे आम और पीपल आदिके पत्तोंसे और पाँचवें साष्टाङ्ग दण्डवत्से आरती करे।'

'आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान्की प्रतिमाके चरणोंमें उसे चार बार घुमाये, दो बार नाभिदेशमें, एक बार मुखमण्डलपर और सात बार समस्त अङ्गोंपर घुमाये'—

आदौ चतुः पादतले च विष्णो-
र्द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम्।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारा-
नारात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात्॥

यथार्थमें आरती पूजनके अन्तमें इष्टदेवताकी प्रसन्नताके हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेवको दीपक दिखानेके साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है। आरतीके दो भाव हैं जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्दसे व्यक्त हुए हैं। नीराजन (**निःशेषेण राजनं प्रकाशनम्**) का अर्थ है—विशेषरूपसे, निःशेषरूपसे प्रकाशित करना। अनेक दीप-बत्तियाँ जलाकर विग्रहके चारों ओर घुमानेका अभिप्राय यही है कि पूरा-का-पूरा विग्रह एड़ीसे चोटीतक प्रकाशित हो उठे—चमक उठे, अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्पष्टरूपसे उद्भासित हो जाय, जिसमें दर्शक या उपासक भलीभाँति देवताकी रूप-छटाको निहार सके, हृदयंगम कर सके। दूसरा 'आरती' शब्द (जो संस्कृतके आर्तिका प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है—अरिष्ट) विशेषतः माधुर्य-उपासनासे सम्बन्धित है। 'आरती वारना' का अर्थ है—आर्ति-निवारण, अनिष्टसे अपने प्रियतम प्रभुको बचाना। इस रूपमें यह एक तान्त्रिक क्रिया है, जिससे प्रज्वलित दीपक अपने इष्टदेवके चारों ओर घुमाकर उनकी सारी विघ्न-बाधा टाली जाती है। आरती लेनेसे भी यही तात्पर्य है— उनकी 'आर्ति' (कष्ट)-को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्योछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भावके द्योतक हैं। इसी रूपमें छोटे बच्चोंकी माताएँ तथा बहिनें लोकमें भी आरती (या आरत) उतारती हैं। यह '**आरती**' मूलरूपमें कुछ मन्त्रोच्चारणके साथ केवल कष्ट-निवारणके भावसे उतारी जाती रही होगी। आजकल वैदिक-उपासनामें उसके साथ-साथ वैदिक मन्त्रोंका उच्चारण होता है तथा पौराणिक एवं तान्त्रिक-उपासनामें उसके साथ सुन्दर-सुन्दर भावपूर्ण पद्य-रचनाएँ गायी जाती हैं। ऋतु, पर्व, पूजाके समय आदि भेदोंसे भी आरती की जाती है।

॥ श्रीहरि:॥

संक्षिप्त पूजन-विधि

किसी देवता या देवीके पूजनके पहले पूजन-वस्तु एवं शरीरकी शुद्धि अनिवार्य होती है। पूजाकी अनेक विधियाँ हैं। यथा—

१-पञ्चोपचार—१-गन्ध, २-पुष्प, ३-धूप, ४-दीप और ५-नैवेद्य।

२-दशोपचार—१-पाद्य, २-अर्घ्य, ३-आचमन, ४-स्नान, ५-वस्त्र, ६-गन्ध, ७-पुष्प, ८-धूप, ९-दीप और १०-नैवेद्य।

३-षोडशोपचार—१-पाद्य, २-अर्घ्य, ३-आचमन, ४-स्नान, ५-वस्त्र, ६-आभूषण, ७-गन्ध, ८-पुष्प, ९-धूप, १०-दीप, ११ नैवेद्य, १२-आचमन, १३-ताम्बूल, १४-स्तवपाठ, १५-तर्पण (पुष्पाञ्जलि) और १६-नमस्कार।

आचमन—१- **ॐ केशवाय नमः**, २- **ॐ नारायणाय नमः**, ३-**ॐ माधवाय नमः**।—इन तीन मन्त्रोंसे पृथक्-पृथक् हाथमें जल लेकर मन्त्र पढ़ते हुए आचमन करे। इसके बाद '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' बोलकर हाथ धो ले।

शरीरशुद्धि— **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।**
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

—इस मन्त्रसे शरीरका जलसे सेचन करे।

तदनन्तर मङ्गलपाठ करे और गणेश-स्मरण करे—

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

सङ्कल्प—हाथमें अक्षत-पुष्प आदि लेकर पूजनका सङ्कल्प करे—
ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य......अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च......देवस्य [देव्याः] पूजनं करिष्ये।

ध्यान—जिस देवताकी पूजा करनी हो उसका ध्यान कर ले। जैसे—'**विष्णवे नमः**' विष्णुको नमस्कार कर ले। इसी तरह जिस देवीका ध्यान करना हो उस देवीका ध्यान करे। जैसे—'**दुर्गादेव्यै नमः**' —दुर्गादेवीको नमस्कार कर ले।

आवाहन— हाथमें अक्षत, पुष्प लेकर उस देवताका आवाहन करे—
अमुक*-देवाय/ देव्यै नमः, आवाहयामि। अक्षत, पुष्प जमीनपर छोड़ दे।

आसन—अक्षत, पुष्प लेकर निम्न मन्त्रसे आसन प्रदान करे—

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्॥

'आसनं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

पाद्य—'पादयोः पाद्यं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

अर्घ्य—'हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

आचमन—'आचमनीयं जलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

स्नान—'स्नानीयं जलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

वस्त्र—'वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि' अमुक-देवाय/ देव्यै नमः।

यज्ञोपवीत—'यज्ञोपवीतं समर्पयामि' अमुक-देवाय नमः।

---

*अमुकके स्थानपर जिस देवी-देवताका पूजन करना हो वहाँ उस देवी-देवताका उच्चारण करना चाहिये।

चन्दन—'चन्दनं समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

अक्षत—'अक्षतान् समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

पुष्प—'पुष्पाणि समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

पुष्पमाला—'पुष्पमालां समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

धूप—'धूपमाघ्रापयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

दीप—'दीपं दर्शयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

नैवेद्य—'नैवेद्यं निवेदयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

फल—'फलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

ताम्बूल—'ताम्बूलं समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

दक्षिणा—'दक्षिणां समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

आरती—'आरार्तिक्यं समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—'मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

प्रदक्षिणा—'प्रदक्षिणां समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

नमस्कार—'प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि' अमुक-देवाय/देव्यै नमः।

इसके बाद क्षमा-याचना करे—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन। यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारुण्यभावेन रक्ष मां परमेश्वर॥

समर्पण—'ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु'—कहकर समस्त पूजन-कर्म भगवान्‌को निवेदित कर दे।

मानस-पूजा

बाह्यपूजाके साथ-साथ मानस-पूजाका भी अत्यधिक महत्त्व है। जो बाह्यपूजा न कर सकें तो वे भी मानस-पूजा तो कर ही सकते हैं। यहाँ मानस-पूजाका संक्षिप्त स्वरूप दिया जा रहा है—

(१) ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं पृथ्वीरूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूँ।)

(२) ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं आकाशरूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।)

(३) ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि।

(प्रभो! मैं वायुदेवके रूपमें धूप आपको प्रदान करता हूँ।)

(४) ॐ रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि।

(प्रभो! मैं अग्निदेवके रूपमें दीपक आपको प्रदान करता हूँ।)

(५) ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि।

(प्रभो! मैं अमृतरूपी नैवेद्य आपको निवेदन करता हूँ।)

(६) ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि।

(प्रभो! मैं सर्वात्माके रूपमें संसारके सभी उपचारोंको आपके चरणोंमें समर्पित करता हूँ।)

इन मन्त्रोंसे भावनापूर्वक मानस-पूजा की जा सकती है।

पूजन-सम्बन्धी जाननेयोग्य कुछ आवश्यक बातें

सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, विष्णु—ये पञ्चदेव कहे गये हैं। इनकी पूजा सभी कार्योंमें करनी चाहिये।

कल्याण चाहनेवाले गृहस्थ एक मूर्तिकी ही पूजा न करें, अनेक देवमूर्तिकी पूजा करें, इससे कामना पूरी होती है। किन्तु घरमें दो शिवलिङ्ग, तीन गणेश, दो शङ्ख, दो सूर्य, तीन दुर्गामूर्ति, दो गोमतीचक्र और दो शालग्रामकी पूजा करनेसे गृहस्थ मनुष्यको अशान्ति होती है। शालग्रामकी प्राणप्रतिष्ठा नहीं होती। बाणलिङ्ग तीनों लोकोंमें विख्यात हैं, उनकी प्राणप्रतिष्ठा, संस्कार या आवाहन कुछ भी नहीं होता।

पत्थर, काष्ठ, सोना या अन्य धातुओंकी मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा घर या मन्दिरमें करनी चाहिये। घरमें चल प्रतिष्ठा और मन्दिरमें अचल प्रतिष्ठा करनी चाहिये। यह कर्मज्ञानी मुनियोंका मत है। गङ्गाजीमें, शालग्रामशिलामें तथा शिवलिङ्गमें सभी देवताओंका पूजन बिना आवाहन-विसर्जन किया जा सकता है।

तुलसीदल-चयन—तुलसीका एक-एक पत्ता न तोड़कर पत्तियोंके साथ अग्रभागको तोड़ना चाहिये। तुलसीकी मञ्जरी सब फूलोंसे बढ़कर मानी जाती है। मञ्जरी तोड़ते समय उसमें पत्तियोंका रहना भी आवश्यक माना गया है।

तुलसीदल-चयनमें निषिद्ध समय—वैधृति और व्यतीपात—इन दो योगोंमें, मंगल, शुक्र और रवि—इन तीन वारोंमें, द्वादशी, अमावास्या एवं पूर्णिमा—इन तीन तिथियोंमें, संक्रान्ति और

जननाशौच तथा मरणाशौचमें तुलसीदल तोड़ना मना है। संक्रान्ति, अमावास्या, द्वादशी, रात्रि और दोनों संध्याओंमें भी तुलसीदल न तोड़े, किंतु तुलसीके बिना भगवान्‌की पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती, अतः निषिद्ध समयमें तुलसीवृक्षसे स्वयं गिरी हुई पत्तीसे पूजा करे (पहले दिनके पवित्र स्थानपर रखे हुए तुलसीदलसे भी भगवान्‌की पूजा की जा सकती है)। शालग्रामकी पूजाके लिये निषिद्ध तिथियोंमें भी तुलसी तोड़ी जा सकती है। बिना स्नानके और जूता पहनकर भी तुलसी न तोड़े।

बिल्वपत्र तोड़नेका निषिद्ध काल—चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी और अमावास्या तिथियोंको, संक्रान्तिके समय और सोमवारको बिल्वपत्र न तोड़े। किंतु बिल्वपत्र शङ्करजीको बहुत प्रिय है, अतः निषिद्ध समयमें पहले दिनका रखा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिये। शास्त्रने तो यहाँतक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाये हुए बिल्वपत्रको ही धोकर बार-बार चढ़ाता रहे।

बासी जल, फूलका निषेध—जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गये हों, उन्हें देवताओंपर न चढ़ाये। किंतु तुलसीदल और गङ्गाजल बासी नहीं होते। तीर्थोंका जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषणमें भी निर्माल्यका दोष नहीं आता।

मालीके घरमें रखे हुए फूलोंमें बासी दोष नहीं आता। दौना तुलसीकी ही तरह एक पौधा होता है। भगवान् विष्णुको यह बहुत प्रिय है। स्कन्दपुराणमें आया है कि दौनाकी माला भगवान्‌को इतनी प्रिय है कि वे इसे सूख जानेपर भी स्वीकार कर लेते हैं। मणि, रत्न, सुवर्ण, वस्त्र आदिसे बनाये गये फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर चढ़ाना चाहिये।

पूजा-सामग्रीके रखनेका प्रकार—पूजनकी किस वस्तुको किधर रखना चाहिये, इस बातका भी शास्त्रने निर्देश दिया है। इसके अनुसार वस्तुओंको यथास्थान सजा देना चाहिये।

बायीं ओर—(१) सुवासित जलसे भरा उदकुम्भ (जलपात्र), (२) घंटा, (३) धूपदानी और (४) तेलका दीपक भी बायीं ओर रखे।

दायीं ओर—(१) घृतका दीपक और (२) सुवासित जलसे भरा शङ्ख।

सामने—(१) कुंकुम (केसर) और कपूरके साथ घिसा गाढ़ा चन्दन, (२) पुष्प आदि हाथमें तथा चन्दन ताम्रपात्रमें न रखे।

भगवान्‌के आगे—चौकोर जलका घेरा डालकर नैवेद्यकी वस्तु रखे।

पुष्पादि चढ़ानेकी विधि—फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिये। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपरकी ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपरकी ओर ही रखना चाहिये। दूर्वा एवं तुलसीदलको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये। दाहिने हाथके करतलको उत्तान कर मध्यमा, अनामिका और अँगूठेकी सहायतासे फूल चढ़ाना चाहिये।

उतारनेकी विधि—चढ़े हुए फूलको अँगूठे और तर्जनीकी सहायतासे उतारना चाहिये।

देव-पूजामें निषिद्ध पत्र-पुष्प

देवीके लिये विहित-प्रतिषिद्ध पत्र-पुष्प

आक और मदारकी तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल विहित-प्रतिषिद्ध हैं अर्थात् ये शास्त्रोंसे विहित भी हैं और निषिद्ध भी। विहित-प्रतिषिद्धके सम्बन्धमें तत्त्वसागरसंहिताका कथन है कि जब शास्त्रोंसे विहित फूल न मिल पायें तो विहित-प्रतिषिद्ध फूलोंसे पूजा कर लेनी चाहिये।

शिवार्चामें निषिद्ध पत्र-पुष्प

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिन्तिणी, बकुल (मौलसिरी), कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, केतकी, वसंत ऋतुमें खिलनेवाला कंदविशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, शिरीष, सर्ज और दोपहरियाके फूल भगवान् शंकरपर नहीं चढ़ाने चाहिये। वीरमित्रोदयमें इनका संकलन किया गया है।

विष्णुके लिये निषिद्ध फूल

विष्णुभगवान्पर नीचे लिखे फूलोंको चढ़ाना मना है—

आक, धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, कुरैया, सेमल, शिरीष, चिचिड़ा (कोशातकी), कैथ, लाङ्गुली, सहिजन, कचनार, बरगद, गूलर, पाकर, पीपर और अमड़ा (कपीतन)।

घरपर रोपे गये कनेर और दोपहरियाके फूलका भी निषेध है।

सूर्यके लिये निषिद्ध फूल

गुंजा (कृष्णला), धतूरा, कांची, अपराजिता (गिरिकर्णिका), भटकटैया, तगर और अमड़ा—इन्हें सूर्यपर न चढ़ाये। वीरमित्रोदयने इन्हें सूर्यपर चढ़ानेका स्पष्ट निषेध किया है।

॥ श्रीहरिः ॥

आरती-संग्रह
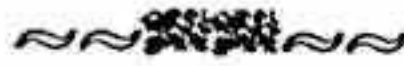
वैदिक आरती

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ
पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ
ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥
(यजुर्वेद ७। १९)

ॐ आ रात्रि पार्थिव छं रजः
पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदाछंसि बृहती वि
तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥
(यजुर्वेद ३४। ३२)

ॐ इद ᳬ हविः प्रजननं मे अस्तु
दशवीर ᳬ सर्वगण ᳬ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशु-
सनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं
पयो रेतो अस्मासु धत्त॥
(यजुर्वेद १९।४८)
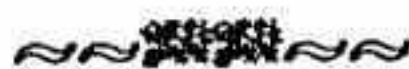
श्रीगणपति-वन्दन

खर्वं स्थूलतनुं गजेन्द्रवदनं लम्बोदरं सुन्दरं
प्रस्यन्दन्मदगन्धलुब्धमधुपव्यालोलगण्डस्थलम् ।
दन्ताघातविदारितारिरुधिरैः सिन्दूरशोभाकरं
वन्दे शैलसुतासुतं गणपतिं सिद्धिप्रदं कामदम्॥

मैं सिद्धिप्रदाता, अभीष्टदायी, पार्वतीनन्दन भगवान् गणेशकी वन्दना करता हूँ, जो नाटे, स्थूलकाय, गजवदन एवं लम्बोदर होनेपर भी अप्रतिम कमनीय हैं, जिनकी कनपटियोंसे चूते हुए मदकी मधुर गन्धसे आकृष्ट भौंरोंके कारण वे कनपटियाँ चञ्चल प्रतीत होती हैं तथा अपने दाँतकी चोटसे विदीर्ण हुए शत्रुओंका रुधिर जिनके मुखपर सिन्दूरकी शोभा धारण करता है।
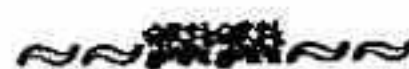
भगवान् श्रीगणपतिजी

श्रीगनपति भज प्रगट पार्वती
अंक बिराजत अविनासी।
ब्रह्मा-बिष्णु-सिवादि सकल सुर
करत आरती उल्लासी॥

त्रिसूलधरको भाग्य मानिकैं
सब जुरि आये कैलासी।
करत ध्यान, गंधर्व गान-रत,
पुष्पनकी हो वर्षा-सी॥

धनि भवानि व्रत साधि लह्यो जिन
पुत्र परम गोलोकासी।
अचल अनादि अखंड परात्पर
भक्तहेतु भव-परकासी॥

विद्या-बुद्धि-निधान गुनाकर
बिघ्नबिनासन दुखनासी।
तुष्टि पुष्टि सुभ लाभ लक्ष्मि सँग
रिद्धि सिद्धि-सी हैं दासी॥

सब कारज जग होत सिद्ध सुभ
द्वादस नाम कहे छासी।
कामधेनु चिंतामनि सुरतरु
चार पदारथ देतासी॥

गज-आनन सुभ सदन रदन इक
सुंडि ढुंढि पुर पूजा-सी।
चार भुजा मोदक-करतल सजि
अंकुस धारत फरसा-सी॥

ब्याल सूत्र त्रयनेत्र भाल ससि
उन्दुरवाहन सुखरासी।
जिनके सुमिरन सेवन करते
टूट जात जमकी फाँसी॥

कृष्णपाल धरि ध्यान निरन्तर
मन लगाय जो कोइ गासी।
दूर करैं भवकी बाधा प्रभु
मुक्ति जन्म निजपद पासी॥

भगवान् श्रीगणेशजी

आरति गजवदन विनायककी।
सुर-मुनि-पूजित गणनायककी॥ टेक॥

एकदंत शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण कानन,
शिवसुत वन्द्यमान-चतुरानन,
दुःखविनाशक सुखदायककी॥ सुर०॥

ऋद्धि-सिद्धि-स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल-मति,
अघ-वन-दहन, अमल अबिगत गति,
विद्या-विनय-विभव-दायककी ॥ सुर०॥

पिङ्गलनयन, विशाल शुंडधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश-कर,
लम्बोदर बाधा-विपत्ति-हर,
सुर-वन्दित सब विधि लायककी॥ सुर०॥

सर्वरूप हरि-वन्दन

यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः॥
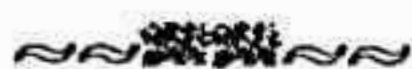
विराट् भगवान्का रूप आरतीमें

हरिजूकी आरती बनी।
अति विचित्र रचना रचि राखी, परति न गिरा गनी॥
कच्छप अध आसन अनूप अति, डाँड़ी सहस फनी।
मही सराव, सप्त सागर घृत, बाती सैल घनी॥
रबि-ससि-ज्योति जगत परिपूरन, हरति तिमिर रजनी।
उड़त फूल उड़गन नभ अन्तर, अंजन घटा घनी॥
नारदादि सनकादि प्रजापति, सुर-नर-असुर-अनी।
काल-कर्म-गुन-ओर अंत नहिं, प्रभु-इच्छा रजनी॥
यह प्रताप दीपक सुनिरंतर लोक सकल भजनी।
सूरदास सब प्रकट ध्यानमें अति विचित्र सजनी॥

सर्वरूप भगवान्

जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे।
मायातीत, महेश्वर
मन-वच-बुद्धि परे ॥टेक॥

आदि, अनादि, अगोचर,
अविचल, अविनाशी।
अतुल, अनन्त, अनामय,
अमित, शक्ति-राशी ॥जय०॥

अमल, अकल, अज, अक्षय,
अव्यय, अविकारी।
सत-चित-सुखमय, सुन्दर
शिव सत्ताधारी ॥जय०॥

विधि-हरि-शंकर-गणपति-
सूर्य-शक्तिरूपा ।
विश्व चराचर तुम ही,
तुम ही जगभूपा ॥जय०॥

माता-पिता-पितामह-
स्वामि-सुहृद भर्ता।
विश्वोत्पादक पालक
रक्षक संहर्ता ॥जय०॥

साक्षी, शरण, सखा, प्रिय,
प्रियतम, पूर्ण प्रभो।
केवल-काल कलानिधि,
कालातीत, विभो॥ जय०॥

राम-कृष्ण, करुणामय,
प्रेमामृत-सागर।
मन-मोहन मुरलीधर,
नित-नव नटनागर॥ जय०॥

सब बिधि हीन, मलिन-मति,
हम अति पातकि-जन।
प्रभुपद-विमुख अभागी,
कलि-कलुषित तन-मन॥ जय०॥

आश्रय-दान दयार्णव!
हम सबको दीजै।
पाप-ताप हर हरि! सब,
निज-जन कर लीजै॥ जय०॥

भगवान् जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे,
प्रभु! जय जगदीश हरे॥टेक॥
भक्तजनोंके संकट
छिनमें दूर करे॥ ॐ॥
जो ध्यावै फल पावै,
दुख विनसै मनका॥प्रभु०॥
सुख-सम्पति घर आवै,
कष्ट मिटै तनका॥ ॐ॥
मात-पिता तुम मेरे,
शरण गहूँ किसकी॥प्रभु०॥
तुम बिन और न दूजा,
आस करूँ जिसकी॥ ॐ॥
तुम पूरन परमात्मा,
तुम अन्तर्यामी॥प्रभु०॥
पारब्रह्म परमेश्वर,
तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥
तुम करुणाके सागर
तुम पालन-कर्ता॥प्रभु०॥
मैं मूरख खल कामी,
कृपा करो भर्ता॥ ॐ॥

तुम हो एक अगोचर,
सबके प्राणपती ॥प्रभु०॥
किस बिधि मिलूँ दयामय!
मैं तुमको कुमती ॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुखहर्ता
तुम ठाकुर मेरे ॥प्रभु०॥
अपने हाथ उठाओ,
द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय-विकार मिटाओ,
पाप हरो देवा ॥प्रभु०॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ,
संतनकी सेवा ॥ ॐ ॥

भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥
ॐ हर हर महादेव ॥
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥
ॐ हर हर महादेव ॥

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ॥
ॐ हर हर महादेव ॥

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी॥
ॐ हर हर महादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे॥
ॐ हर हर महादेव ॥

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी।
सुखकारी दुखहारी जग-पालनकारी॥
ॐ हर हर महादेव ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका॥
ॐ हर हर महादेव ॥

त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोइ नर गावै।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवाञ्छित पावै॥
ॐ हर हर महादेव ॥

पञ्चायतन

जय केशव हर गजमुख सवित-
नंगतनयेऽहं चरणौ तव कलये॥ टेक॥

करुणापारावारं कलिमलपरिहारम्।
कद्रूसुतशयितारं करधृतकह्लारम्॥
घनपटलाभशरीरं कमलोद्भवपितरम्।
कलये विष्णुमुदारं कमलाभर्तारम्॥ जय०॥

भूधरजारतिलीलं मङ्गलकरशीलम्।
भुजगेशस्मृतिलोलं भुजगावलिमालम्॥
भूषाकृतिमतिविमलं संधृतगाङ्गजलम्।
भूयो नौमि कृपालं भूतेश्वरमतुलम्॥ जय०॥

विघ्नारण्यहुताशं विहितानयनाशम्।
विपदवनीधरकुलिशं विधृतांकुशपाशम्॥
विजयार्कज्वलिताशं विदलितभवपाशम्।
विनताः स्मो वयमनिशं विद्याविभवेशम्॥ जय०॥

कश्यपसूनुमुदारं कालिन्दीपितरम्।
कालत्रितयविहारं कामुकमन्दारम्॥
कारुण्याब्धिमपारं कालानलमदरम्।
कारणतत्त्वविचारं कामय ऊष्मकरम्॥ जय०॥

निगमैर्नुतपदकमले निहतासुरजाले।
हस्ते धृतकरवाले निर्जरजनपाले॥
नितरां कृष्णकृपाले निरवधिगुणलीले।
निर्जरनुतपदकमले नित्योत्सवशीले॥ जय०॥

श्रीविष्णु-वन्दना

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥
अशेषसंसारविहारहीन-
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता-
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि॥

भगवान् श्रीसत्यनारायणजी

जय लक्ष्मीरमणा, श्रीलक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी
जन-पातक-हरणा ॥टेक॥

रत्नजटित सिंहासन
अद्भुत छबि राजै।
नारद करत निराजन
घंटा ध्वनि बाजै॥जय०॥

प्रकट भये कलि कारण,
द्विजको दरस दियो।
बूढ़े ब्राह्मण बनकर
कञ्चन-महल कियो॥जय०॥

दुर्बल भील कठारो,
जिनपर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा,
जिनकी बिपति हरी॥जय०॥

वैश्य मनोरथ पायो,
श्रद्धा तज दीन्हीं।
सो फल भोग्यो प्रभुजी
फिर अस्तुति कीन्हीं॥जय०॥

भाव-भक्तिके कारण
छिन-छिन रूप धरयो।
श्रद्धा धारण कीनी,
तिनको काज सरयो॥जय०॥

ग्वाल-बाल सँग राजा
वनमें भक्ति करी।
मनवाञ्छित फल दीन्हों
दीनदयालु हरी॥जय०॥

चढ़त प्रसाद सवायो
कदलीफल, मेवा।
धूप-दीप-तुलसीसे
राजी सत्यदेवा॥जय०॥

(सत्य) नारायणजीकी आरति
जो कोइ नर गावै।
तन-मन-सुख-सम्पति
मन-वाञ्छित फल पावै॥जय०॥

भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायणजी

जय लक्ष्मी-विष्णो।

जय लक्ष्मीनारायण,
जय लक्ष्मी-विष्णो।
जय माधव, जय श्रीपति,
जय जय जय विष्णो॥ जय०॥

जय चम्पा सम-वर्णे
जय नीरदकान्ते।
जय मन्द-स्मित-शोभे
जय अद्भुत शान्ते॥ जय०॥

कमल वराभय-हस्ते
शङ्खादिकधारिन्।
जय कमलालयवासिनि
गरुडासनचारिन्॥ जय०॥

सच्चिन्मयकरचरणे
सच्चिन्मयमूर्ते।
दिव्यानन्द-विलासिनि
जय सुखमयमूर्ते॥ जय०॥

तुम त्रिभुवनकी माता,
तुम सबके त्राता।
तुम लोक-त्रय-जननी,
तुम सबके धाता ॥ जय० ॥

तुम धन-जन-सुख-संतति-
जय देनेवाली।
परमानन्द-बिधाता
तुम हो वनमाली ॥ जय० ॥

तुम हो सुमति घरोंमें,
तुम सबके स्वामी।
चेतन और अचेतनके
अन्तर्यामी ॥ जय० ॥

शरणागत हूँ,
मुझपर कृपा करो माता।
जय लक्ष्मी-नारायण
नव-मंगल-दाता ॥ जय० ॥

श्रीलक्ष्मी-वन्दना

महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥
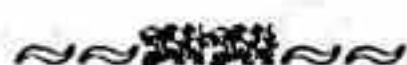
श्रीलक्ष्मीजी

ॐ जय लक्ष्मी माता,
(मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत
हर-विष्णू-धाता ॥ टेक ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी,
तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत,
नारद ऋषि गाता ॥ ॐजय० ॥
दुर्गारूप निरंजनि,
सुख-सम्पति दाता।
जो कोइ तुमको ध्यावत,
ऋधि-सिधि-धन पाता ॥ ॐजय० ॥
तुम पाताल-निवासिनि,
तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि,
भवनिधिकी त्राता ॥ ॐजय० ॥
जिस घर तुम रहती,
तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता,
मन नहिं घबराता ॥ ॐजय० ॥

तुम बिन यज्ञ न होते,
वस्त्र न हो पाता।
खान-पानका वैभव
सब तुमसे आता॥ ॐजय० ॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर,
क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन
कोई नहिं पाता॥ ॐजय० ॥
महालक्ष्मी (जी) की आरति,
जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता,
पाप उतर जाता॥ ॐजय० ॥
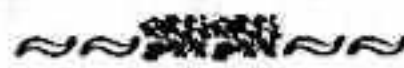
श्रीदशावताररूप हरिवन्दना

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः॥

श्रीदशावतार

ॐ प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्।
विहितवहित्रचरित्रमखेदम् ॥
केशव धृतमीनशरीर जय जगदीश हरे॥
क्षितिरतिविपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे।
धरणिधरणकिणचक्रगरिष्ठे ॥
केशव धृतकच्छपरूप जय जगदीश हरे॥
वसति दशनशिखरे धरणी तव लग्ना।
शशिनि कलङ्ककलेव निमग्ना॥
केशव धृतशूकररूप जय जगदीश हरे॥
तव करकमलवरे नखमद्भुतशृङ्गम्।
दलितहिरण्यकशिपुतनुभृङ्गम् ॥
केशव धृतनरहरिरूप जय जगदीश हरे॥
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुतवामन।
पदनखनीरजनितजनपावन ॥
केशव धृतवामनरूप जय जगदीश हरे॥
क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापम्।
स्नपयसि पयसि शमितभवतापम्॥
केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश हरे॥
वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयम्।
दशमुखमौलिबलिं रमणीयम्॥

केशव धृतरघुपतिवेष जय जगदीश हरे ॥
वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभम् ।
हलहतिभीतिमिलितयमुनाभम् ॥
केशव धृतहलधररूप जय जगदीश हरे ॥
निन्दसि यज्ञविधेरहह श्रुतिजातम् ।
सदयहृदयदर्शितपशुघातम् ॥
केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे ॥
म्लेच्छनिवहनिधने कलयसि करवालम् ।
धूमकेतुमिव किमपि करालम् ॥
केशव धृतकल्किशरीर जय जगदीश हरे ॥
श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारम् ।
शृणु सुखदं शुभदं भवसारम् ॥
केशव धृतदशविधरूप जय जगदीश हरे ॥
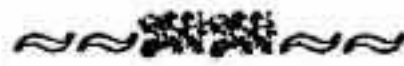
श्रीराम-वन्दना

श्रीरामचन्द्र रघुपुङ्गव राजवर्य
राजेन्द्र राम रघुनायक राघवेश ।
राजाधिराज रघुनन्दन रामचन्द्र
दासोऽहमद्य भवतः शरणागतोऽस्मि ॥
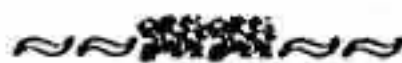
भगवान् श्रीराम

कृत्वा शिरसि निदेशं पितुरंसे चापम्।
कृतमखरक्षो हृतवान् कौशिकहृत्तापम्॥
गत्वा तेनैव समं मिथिलाधीशसदः।
शिवधनुषा सह भग्नः शूरम्मन्यमदः॥
जय जय रघुकुलभूषण भगवन् दाशरथे।
रमतां त्वयि चित्तमिदं शंकरगीतकथे॥
स्पृष्टा पदरजसा ते शैली मुनियोषा।
साध्वीष्वाद्यं लेभे पदमपगतदोषा॥
उपहृतबदरा शबरी जात्यातिजघन्या।
दृष्ट्वा ते पदपङ्कजमभवद् भुवि धन्या॥
कपिकुलजोऽप्येको भुवि हनुमान् सफलजनुः।
सुधिया येन नियुक्ता तव कार्ये स्वतनुः॥
तीर्णो मृत्युः कृत्वा त्वां सुहृदं प्रेष्ठम्।
स्थाने प्राहुर्मुनयो यं सुधियां श्रेष्ठम्॥
पारं लवणाम्भोधेः कपिसेनां नेतुम्।
रचयामासिथ जलधेः पृष्ठेऽद्भुतसेतुम्॥
दृष्टे यस्मिञ्जन्तोः शमलं याति लयम्।
पतिते देहे पश्यति नासौ यमनिलयम्॥

पातकपर्वतवज्रं राघव तव नाम।
श्रेयःसम्पत्तीनां पदकमलं धाम॥
ध्यायन्त्यभ्रश्यामं त्वां शम्भुप्रमुखाः।
केशवसाम्यं यान्ति न तव भजने विमुखाः॥
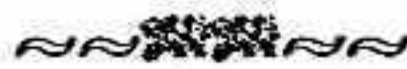
~~~

भगवान् श्रीरामचन्द्र

श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन
हरण भव भय दारुणम्।
नवकंजलोचन, कंज-मुख
कर-कंज पद-कंजारुणम्॥
कंदर्प अगणित अमित छबि,
नवनील-नीरद-सुंदरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि
शुचि नौमि जनक सुता-वरम्॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-
दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद
दशरथ-नंदनम्॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु
उदार अंग विभूषणम्।
~~~

आजानुभुज शर-चाप-धर
संग्राम-जित-खर-दूषणम् ।
इति वदति तुलसीदास शंकर-
शेष-मुनि-मन-रंजनम् ॥
मम हृदय कंज निवास कुरु
कामादि-खल-दल-गंजनम् ॥
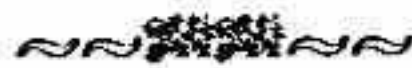
भगवान् श्रीरामचन्द्र

बंदौं रघुपति करुना-निधान।
जाते छूटै भव-भेद ग्यान॥
रघुबंस-कुमुद-सुखप्रद निसेस।
सेवत पद-पंकज अज-महेस॥
निज भक्त-हृदय पाथोज-भृंग।
लावन्यबपुष अगनित अनंग॥
अति प्रबल मोह-तम-मारतंड।
अग्यान-गहन-पावक-प्रचंड॥
अभिमान-सिंधु-कुम्भज उदार।
सुररंजन, भंजन भूमिभार॥
रागादि-सर्पगन-पन्नगारि ।
कंदर्प-नाग-मृगपति, मुरारि॥

भव-जलधि-पोत चरनारबिंद।
जानकी-रवन आनंद-कंद॥
हनुमंत-प्रेम-बापी-मराल ।
निष्काम कामधुक गो दयाल॥
त्रैलोक-तिलक, गुनगहन राम।
कह तुलसिदास बिश्राम-धाम॥

भगवान् श्रीराम रघुवीर

ऐसी आरती राम रघुबीरकी करहि मन।
हरन दुखदुंद गोबिंद आनंदघन॥
अचर चर रूप हरि, सर्वगत, सर्वदा
बसत इति बासना धूप दीजै।
दीप निजबोधगत कोह-मद-मोह-तम
प्रौढ़ अभिमान चित्तवृत्ति छीजै॥
भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ
श्रीरमण परम संतोषकारी।
प्रेम-तांबूल गत शूल संशय सकल,
विपुल भव-वासना-बीजहारी॥
अशुभ-शुभ कर्म घृत-पूर्ण दशवर्तिका,
त्याग पावक, सतोगुण प्रकासं।
भक्ति-वैराग्य-विज्ञान दीपावली,
अर्पि नीराजनं जगनिवासं॥

विमल हृदि-भवन कृत शांति-पर्यंक शुभ,
शयन विश्राम श्रीरामराया।
क्षमा-करुणा प्रमुख तत्र परिचारिका,
यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया॥
आरती-निरत सनकादि, श्रुति, शेष, शिव,
देवरिषि, अखिलमुनि तत्त्व-दरसी।
करै सोइ तरै, परिहरै कामादि मल,
वदति इति अमलमति दास तुलसी॥
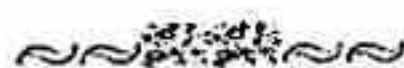
भगवान् श्रीराम

हरति सब आरती आरती रामकी।
दहन दुख-दोष निरमूलिनी कामकी॥
सुभग सौरभ धूप दीपबर मालिका।
उड़त अघ-बिहँग सुनि ताल करतालिका॥
भक्त-हृदि-भवन अज्ञान-तम-हारिनी।
बिमल बिग्यानमय तेजबिस्तारिनी॥
मोह-मद-कोह-कलि-कंज-हिम-जामिनी।
मुक्तिकी दूतिका, देह-दुति दामिनी॥
प्रनत-जन-कुमुद-बन-इंदु-कर-जालिका।
तुलसि अभिमानमहिषेस बहु कालिका॥

भगवान् मर्यादापुरुषोत्तम

आरती कीजै श्रीरघुबरकी।
सत चित आनँद शिव सुंदरकी॥ टेक॥

दशरथ-तनय कौसिला-नन्दन,
सुर-मुनि-रक्षक दैत्य-निकन्दन,
अनुगत-भक्त भक्त-उर-चन्दन,
मर्यादा-पुरुषोत्तम वरकी॥
आरती कीजै०॥

निर्गुन-सगुन, अरूप-रूपनिधि,
सकल लोक-वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक-भय, दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर-वरकी॥
आरती कीजै०॥

जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित-मति,
एकमात्र गति सचराचरकी॥
आरती कीजै०॥

शरणागत-वत्सल-व्रतधारी,
भक्त कल्पतरु-वर असुरारी,
नाम लेत जग पावनकारी,
वानर-सखा दीन-दुख-हरकी॥
आरती कीजै०॥

श्रीराम-लक्ष्मण

अति सुख कौसिल्या उठि धाई।
मुदित बदन मन मुदित सदनतें,
आरति साजि सुमित्रा ल्याई॥
जनु सुरभी बन बसति बच्छ बिनु,
परबस पसुपतिकी बहराई।
चलीं साँझ समुहाहि स्त्रवत थन,
उमँगि मिलन जननी दोउ आई॥
दधि-फल-दूब कनक-कोपर भरि,
साजत सौंज बिचित्र बनाई।
अमी-बचन सुनि होत कोलाहल,
देवनि दिवि दुंदुभी बजाई॥
बरन-बरन पट परत पाँवड़े,
बीथिन सकल सुगंध सिंचाई।
पुलकित-रोम, हरष-गदगद-स्वर,
जुबतिनि मंगल गाथा गाई॥
निज मंदिर लै आनि तिलक दै,
दुज गन मुदित असीस सुनाई।
सियासहित सुख बसो इहाँ तुम
'सूरदास' नित उठि बलि जाई॥

सिंहासनासीन भगवान् श्रीरामचन्द्र

गृह-गृह आँगन होत बधाई।
श्रीरामचंद्र सिंहासन बैठे चामर छत्र ढुराई॥
मंगल-साज लिएँ सब सुंदरि नव नूतन सजि आई।
तिलक किएँ यव अंकुर सिर धरि आरति करत सुहाई॥
जय-जयकार भयो त्रिभुवनमें दुंदुभि देव बजाई।
सुर-नर-मुनिजन मुदित, पुष्प बरसावत अंबर छाई॥
चिर जीवो अबिचल रजधानी भक्तनके सुखदाई।
श्रीरघुनाथ चरन-पंकज-रज रामदास निधि पाई॥

भगवान् श्रीसीतारामजी

जनकसुतासहितं रघुराजम्,
अधिसिंहासनमतिसुखभाजम् ॥
कापि हि नीराजयति परा,
मणिदीपावलि ललितकरा॥ ध्रु०॥
काचन मृदु वादयति मृदङ्गम्,
झल्लरिकामपि कापि सुरङ्गम्॥
उदयति भूषणनिकरमरीचि-
र्लसति सखीषु च कौतुकवीचिः॥
हरेर्भणितमिदमनु रघुवीरम्,
निवसतु चेतसि सरसगभीरम्॥

भगवान् श्रीसीताराम

आरती करत कौसल्या मैया॥
कंचन थार बारि घृत-बाती,
जुगल अंगन की लेत बलैया।
रतन सिंहासन सुखद सुहावन
राजैं दंपति चारों भैया॥
चमर मोरछल करत पवनसुत,
जय-जय बोलत मन हरषैया।
सरसमाधुरी सियाराम की
बाँकी झाँकी हृदय धरैया॥

भगवान् श्रीसीताराम

गाओ गाओ री, प्रिया-
प्रीतमकी आरति गाओ।
आसपास सखियाँ सुख दैनी,
सजि नव साज सिंगार सुनैनी,
बीन सितार लिएँ पिकबैनी,
गाइ सुराग सुनाओ॥
अनुपम छबि धरि दंपति राजत,
नील पीत पट भूषन भ्राजत,

निरखत अगनित रति छबि लाजत,
नैननको फल पाओ।
नीरजनैन चपल चितवनमें,
रुचिर अरुनिमा सुचि अधरनमें,
चंद्रबदनकी मधु मुसकनमें
निज नयनाँ अरुझाओ॥
कंचन थार सँवारि मनोहर,
घृत कपूर सुभ बाति ज्योतिकर,
मुरछल चवँर लिएँ रामेस्वर
हरषि सुमन बरसाओ॥

~~~

भगवान् श्रीसीताराम

जयति श्रीजानकिबल्लभ लाल,
करूँ तव आरति होय निहाल॥
सीस पर क्रीट मुकुट झलकैं,
कपोलन पै झूलैं अलकैं,
कर्ण में कर्णफूल चमकैं,
नैन कजरारे, मोहनियाँ डारे, सुमन रतनारे,
सो चन्दन कुंकुम केसर भाल॥
मधुर अति मूरत स्यामल-गौर,
सुछबि जोड़ी राजत इक ठौर,
~~~

नहीं है उपमा कोई और,
निरखि रति लजै, मैन मद तजै, अंग सुभ सजै,
सो भूषन बर मुक्ता-मनि-जाल॥

परस्पर दो चकोर, दो चंद,
प्रिया-प्रिय अनुपम सुषमा-कंद,
प्रेम-हिय छायो परमानंद,
मंद मृदु हँसन, रुचिर दुति दसन, मनोहर बसन,
दोउ सोहैं गल बहियाँ डाल॥

बजत बीना सितार सुमृदंग,
सबै मिलि गावत सहित उमंग,
होत पुलकायमान अँग-अँग,
रंग जब चढ़त, प्रेम हिय बढ़त, नयन जल कढ़त।
मधुर स्वर गावत दै दै ताल॥

स्वामिनी स्वामि कृपा-आगार,
प्रनत जन रामेस्वर आधार,
जोरि कर बिनवत बारंबार,
कछू नहिं बनत, नेम-तप-वरत, रहौं पद निरत,
करूँ नव आरति होइ निहाल॥

भगवान् श्रीसीताराम

जुगल छबिकी आरति करूँ नीकी।
गौर-बरन श्रीजनकललीकी,
स्याम-बरन सिय-पीकी॥
मुकुट चंद्रिकामें द्युति राजै
अगनित सूर्य-ससीकी।
सुंदर अंग-अंगमें छबि है
कोटिन काम-रतीकी॥
जुगलरूपमें सबही पटतर
उपमा हो गई फीकी।
रामेस्वर लखि ललित जुगल छबि
हुलसत हिय सबहीकी॥

भगवान् श्रीसीताराम

सुंदर बदन बिलोकि कै नैनन फल लीजै।
(श्री) जानकीवल्लभलालकी सखि आरति कीजै॥
सुंदर ललित कपोलना छुटि अलक बिराजै।
कंठा कंठ सुहावना गजमुक्ता राजै॥
पाग बनी सिर सोहनी दुपटा द्युतिकारी।
पटुका है पँच रंगका मनिजड़ित किनारी॥
सियाजीकी कुसुमी चूनरी सोभित अति न्यारी।
रसिक अलीकी स्वामिनी अतुलित छबि भारी॥
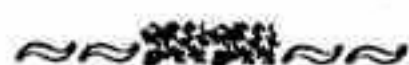
भगवान् श्रीराघवजी

आज बनी छबि भारी (श्रीराघवजीकी)।
सहित जानकी रत्नसिंहासन
राजत अवधबिहारी॥
रवि, शशि कोटि देखि छबि लाजे
तिलक पटल द्युतिकारी।
बदनमयंक तापत्रयमोचन
मंद हासरस न्यारी॥
बाम अंग श्रीसीता (जी) सोहैं,
हनुमत आज्ञाकारी।
गौर श्याम सुंदर तन सोहैं
चन्द्रबदन उजियारी॥
रत्नजटित आभूषण सोहै
मोतिनकी छबि भारी।
क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल
गल बनमाला प्यारी॥
बाहु विशाल विभूषण सुन्दर
कर शुचि सारंगधारी।
कटि पट पीत बसनकी सोभा
मोहन मदन निहारी॥
मुनिजन चरण सरोरुह सेवत
ध्यान धरत त्रिपुरारी।

चतुर सखी मिलि करत आरती
सज कंचनकी थारी॥
सेवक-राम जयध्वनि उचरत
गावत पुर नर-नारी।
मातु कौसिला लेत बलैया
तन-मन सर्बस वारी॥
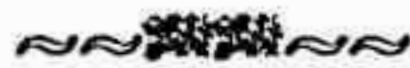
भगवान् श्रीजानकीनाथ

जय जानकिनाथा, जय श्रीरघुनाथा।
दोउ कर जोरें बिनवौं प्रभु! सुनिये बाता॥ टेक॥
तुम रघुनाथ हमारे प्रान, पिता-माता।
तुम ही सज्जन-संगी भक्ति-मुक्ति-दाता॥ जय०॥
लख चौरासी काटो मेटो यम-त्रासा।
निसिदिन प्रभु मोहि राखिये अपने ही पासा॥ जय०॥
राम भरत लछिमन सँग शत्रुहन भैया।
जगमग ज्योति विराजै, सोभा अति लहिया॥ जय०॥
हनुमत नाद बजावत, नेवर झमकाता।
स्वर्णथाल कर आरती कौसल्या माता॥ जय०॥
सुभग मुकुट सिर, धनु सर कर सोभा भारी।
मनीराम दर्शन करि पल-पल बलिहारी॥ जय०॥
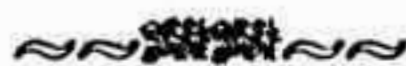
श्रीजानकी-वन्दन

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥

श्रीजानकीजी

आरती जनक-ललीकी कीजै।
सुबरन-थार बारि घृत-बाती,
तन निज बारि रूप-रस पीजै॥
गौर-बरन सुंदर तन सोभा
नख-सिख छबि नैननि भरि लीजै।
सरस-माधुरी स्वामिनि मेरी
चरन-कमलमें चित नित दीजै॥

श्रीजानकीजी

आरति श्रीजनक-दुलारीकी।
सीताजी रघुबर-प्यारीकी॥ टेक॥
जगत-जननि जगकी विस्तारिणि,
नित्य सत्य साकेत-विहारिणि,
परम दयामयि दीनोद्धारिणि,
मैया भक्तन-हितकारीकी॥ सीताजी०॥

सती शिरोमणि पति-हित-कारिणि,
पति-सेवा हित वन-वन चारिणि,
पति-हित पति-वियोग-स्वीकारिणि,
त्याग-धर्म-मूरति-धारीकी ॥ सीताजी० ॥
विमल-कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत कटत कष्ट दुखदाई,
शरणागत-जन-भय-हारीकी ॥ सीताजी० ॥

श्रीजानकीजी

आरति कीजै जनक-ललीकी।
राममधुपमन कमल-कलीकी ॥
रामचंद्र मुखचंद्र चकोरी।
अंतर साँवर बाहर गोरी।
सकल सुमंगल सुफल फलीकी ॥
पिय दृगमृग जुग बंधन डोरी,
पीय प्रेम रस-राशि किशोरी।
पिय मन गति विश्राम थलीकी ॥
रूप-रास-गुननिधि जग स्वामिनि,
प्रेम प्रबीन राम अभिरामिनि।
सरबस धन 'हरिचंद' अलीकी ॥
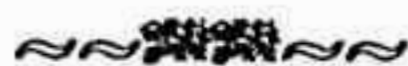
श्रीभरतजी

आरति आरति-हरन भरतकी।
सीयरामपदपंकज रतकी॥
धर्मधुरन्धर धीर, बीरबर।
रामसीय-जस-सौरभ मधुकर।
सील सनेह निबाह निरतकी॥
परमप्रीति पथ प्रगट लखावन।
निज गुनगन जस अघ विद्रावन।
परछत्त पीय प्रेम मूरतकी॥
बुद्धि-विवेक ज्ञानगुन इक रस।
रामानुज संतनके सरबस।
'हरीचंद' प्रभु विषयविरतकी॥

श्रीकृष्ण-वन्दन

वन्दे नवघनश्यामं पीतकौशेयवाससम्।
सानन्दं सुन्दरं शुद्धं श्रीकृष्णं प्रकृतेः परम्॥

भगवान् श्रीगोपालजी

वन्दे गोपालं वन्दे गोपालम्।

मृगमदशोभितभालं करुणाकल्लोलम्।
जय देव, जय देव॥

निर्गुणसगुणाकारं संहृतभूभारम्।
मुरहरनन्दकुमारं मुनिजनसुखकारम्॥

वृन्दावनसंचारं कौस्तुभमणिहारम्।
करुणापारावारं गोवर्द्धनधारम्॥

कुञ्चितकुन्तलनीलं शरदिन्दुभवदनम्।
मणिगणमण्डितकुण्डलशोभितश्रुतियुगलम्॥

विकसितपङ्कजनयनं विलसितभ्रूयुगलम्।
बिम्बाधरमतिसुन्दरनासामणिलोलम्॥

कम्बुग्रीवं कौस्तुभमणिकण्ठाभरणम्।
श्रीवत्साङ्कितदेहं लम्बितवनमालम्॥

भूषितभुजवरयुगलं करतलधृतवेणुम्।
त्रिवलीशोभितमध्यं करधृतनवनीतम्॥

मुरलीवादनलीलासप्तस्वरगीतम्।
जलचरवनचरखेचररञ्जनसंगीतम्॥

स्तम्भितयमुनातोयं परमाद्भुतचरितम्।
गोपीचित्तविनोदनकारं श्रीकान्तम्॥

रासक्रीडामण्डलवेष्टितव्रजललनम्।

मध्ये ताण्डवनृत्यत्कोमलपदयुगलम् ॥
कुसुमाकारविरञ्जितमन्दस्मितवदनम् ।
कालियफणिवरदलनं यक्षेश्वरहननम् ॥
किङ्किणिमण्डितमध्यं पीताम्बरवसनम् ।
मञ्जुलनूपुरशिञ्जितविलसत्पदयुगलम् ॥
गोगोपीपरिवेष्टितयमुनातटसंस्थम् ।
व्यासाभयदं सुखदं भुवनत्रयपालम् ॥
जय देव, जयदेव ॥
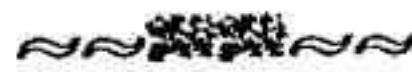
भगवान् श्रीव्रजराज

जय निगमागमगीतमहोदय श्रीव्रजराज हरे ।
सच्चित्सुखघन स्वात्ममहित्वे रमसे प्रकृतिपरे ॥
नित्यां क्ष्वेलसुखां निजलीलां कर्तुं दृक्प्रसरे ।
यो राधसा द्विधात्मनि धत्ते पुंस्त्रीरूपवरे ॥
वामांशतोऽस्य वामं नित्यायूथशतम् ।
सौभाग्यैकनिकेतं स्वामिन्या विततम् ॥
जातं ततोऽन्यतोऽपि लीलानुप्रकृतम् ।
गोगोपालीविपिनविहारं प्रकटानन्दभृतम् ॥
फुल्लेन्दीवरसुन्दररूपं लावण्यैकधनम् ।
परमोदारचरित्रविचित्रं कल्याणैकधनम् ॥

मञ्जुलमणिमञ्जीरतुलाभिः शोभितयुगचरणम्।
चन्द्रकलाकलिताम्बुजकल्पं भजतो यच्छरणम्॥
मुद्रितसुमहेन्द्रमणिकवाटं हृत्सुषमागारम्।
मञ्जुलमण्डनरत्नसुहारैर्लक्ष्म्याः सुविहारम्॥
भोगिसुभोगनिभे भुजयुगले भवरक्षासारम्।
केयूरैः कटकैर्मुद्राभिर्लोकेऽभिस्फारम्॥
सितहीरकचिबुकं गुरुमुक्ताकृतनासाभरणम्।
शोणसरलसुविराजिततिलकं भवमङ्गलकरणम्॥
मारकतोज्ज्वलकुण्डलयुगलं मकराकृतिहरणम्।
यस्याननेन्दुमण्डलममलं ज्योतिःस्मितशरणम्॥
छुरितालकचूडाचूडामणिबर्हापीडवरम्।
केतकिदलावतंसमनुश्रितमल्लीमाल्यभरम्॥
यस्याम्बुजतुलसीगुञ्जालीकृतदामप्रसरम्।
काञ्चनसूत्रसुगुम्फविचित्रं पीतनिचोलसरम्॥
दाडिमकुलानुकृतदन्ताली स्फुरति वदनसदने।
कूजति हरेर्मुरलिका मधुरं करपल्लवशयने॥
वृन्दाविपिने रासविहारे सुरवरविटपितले।
चिन्तामणिजटितेऽक्षरपीठे युक्तहृदब्जदले॥
श्रुतिमुनिरूपव्रजस्त्रीयूथे विहरसि गीतकले।
यमुनातीरे मन्दसमीरे मुखरितभृङ्गदले॥
कामदुहानिवहे गोपानामनुपमरूपधरः।
वर्षस्यधरसुधां निजवेणौ पूर्णानन्दभरः॥

नृत्यति रासे व्रजबालाभिस्तावद्रूपकरः।
मन्मथमन्मथनिकरापीच्यां मूर्तिं वहति वरः॥
भज भज नन्दयशोदानन्दं भज वृन्दावनकेलिम्।
भज वृषभानुसुतासङ्गे कृतनित्यनवीनसुखेलम्॥
भज गोविन्दं गोकुलनाथं भज धृतपीतसुचेलम्।
भज भजतां सुरतरुजितसारं त्यज चान्याननुकेलम्॥
जय मङ्गलमङ्गलनिजरूपैर्निजमङ्गलदारैः।
जय मङ्गलमङ्गलनिजरूपैर्निजभक्तैः सुविहारैः॥

भगवान् श्रीकृष्ण

आरति श्रीकृष्ण कन्हैयाकी,
मथुरा-कारागृह-अवतारी,
गोकुल जसुदा-गोद-विहारी,
नंदलाल नटवर गिरिधारी,
वासुदेव हलधर-भैयाकी॥आरति०॥

मोर-मुकुट पीताम्बर छाजै,
कटि काछनि, कर मुरलि विराजै,
पूर्ण सरद ससि मुख लखि लाजै,
काम कोटि छबि जितवैयाकी॥आरति०॥

गोपीजन-रस-रास-विलासी,
कौरव-कालिय-कंस-बिनासी,
हिमकर-भानु-कृसानु-प्रकासी,
सर्वभूत-हिय-बसवैयाकी ॥ आरति० ॥

कहुँ रन चढ़ै भागि कहुँ जावै,
कहुँ नृप कर, कहुँ गाय चरावै,
कहुँ जागेस, बेद जस गावै,
जग नचाय ब्रज-नचवैयाकी ॥ आरति० ॥

अगुन-सगुन लीला-बपु-धारी,
अनुपम गीता-ज्ञान-प्रचारी,
'दामोदर' सब बिधि बलिहारी,
बिप्र-धेनु-सुर-रखवैयाकी ॥ आरति० ॥

भगवान् नटवर

आरति कीजै श्रीनटवरकी।
गोवर्धन-धर वंशीधरकी ॥ टेक ॥

नंद-सुवन जसुमतिके लाला,
गोधन गोपी प्रिय गोपाला,
देवप्रिय असुरनके काला,
मोहन विश्वविमोहन वरकी ॥
आरति कीजै० ॥

जय वसुदेव-देवकी-नन्दन,
कालयवन-कंसादि-निकन्दन,
जगदाधार अजय जगवंदन,
नित्य नवीन परम सुंदरकी॥
आरति कीजै०॥

अकल कलाधर सकल विश्वधर,
विश्वम्भर कामद करुणाकर,
अजर, अमर, मायिक, मायाहर,
निर्गुन चिन्मय गुणमन्दिरकी॥
आरति कीजै०॥

पाण्डव-पूत परीक्षित रक्षक,
अतुलित अहि अघ-मूषक-भक्षक,
जगमय जगत निरीह निरीक्षक,
ब्रह्म परात्पर परमेश्वरकी॥
आरति कीजै०॥

नित्य सत्य गोलोकविहारी,
अजाव्यक्त लीलावपुधारी,
लीलामय लीलाविस्तारी,
मधुर मनोहर राधावरकी॥
आरति कीजै०॥

भगवान् श्यामसुन्दर

आरति कीजै स्यामसुंदरकी।
नंदकुमार राधिकाबरकी॥

भक्ति दीप कर प्रेम सुबाती।
सत-संगति कर अनुदिनराती॥

आरति ब्रजयुवती मन भावै।
स्यामलीला हितहरिबंस गावै॥
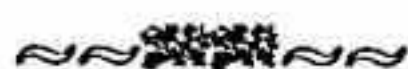
~~~

भगवान् नन्दकिशोर

आरति कीजै सुन्दर बरकी।
नन्दकिसोर जसोदानन्दन
नागर नवल ताप-तम-हरकी॥

बनविलास मृदु हास मनोहर
श्रवन सुधा सुख मोहन करकी॥

बिहारीदास लोचन चकोर नित
अंस जु प्रिया लाल भुजधरकी॥

~~~
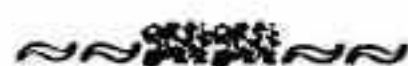
भगवान् श्रीकृष्ण

मंगल आरती

[१]

(माई) मंगल आरति गुपालकी।
नित प्रति मंगल होत निरख मुख
चितवन नयन बिसालकी॥
मंगल रूप स्याम सुंदरको
मंगल भृकुटि सुभाल की॥
चत्रभुज दास सदा मंगल निधि
बानिक गिरिधरलालकी॥

[२]

मंगल आरति कीजै भोर।
मंगल जन्म-करम गुन मंगल,
मंगल जसुदा-माखन-चोर।
मंगल बेनु, मुकुट बर मंगल,
मंगल रूप रमै मन मोर॥
जन भगवान जगतमें मंगल,
मंगल राधा जुगल किसोर॥

[३]

मंगल आरति कर मन मोर।
भरम-निसा बीती, भयो भोर॥

मंगल बाजत झालर ताल।
मंगल रूप उठे नँदलाल॥
मंगल धूप-दीप कर जोर।
मंगल सब बिधि गावत होर॥
मंगल उदयो मंगल रास।
मंगल बल परमानँद दास॥

[४]

मंगल माधौ नाम उचार।
मंगल बदन-कमल, कर मंगल,
मंगल जनकी सदा सँभार॥
देखत मंगल, पूजत मंगल,
गावत मंगल चरित उदार।
मंगल श्रवन्, कथा-रस मंगल,
मंगल-पनु वसुदेव-कुमार॥
गोकुल मंगल, मधुवन मंगल,
मंगल-रुचि वृन्दाबनचंद।
मंगल करत गोवर्धनधारी,
मंगल-वेष जसोदानंद॥
मंगल धेनु, रेनु-भू मंगल,
मंगल मधुर बजावत बेन।
मंगल गोपबधू-परिरंभन,
मंगल कालिंदी-पय-फेन॥

मंगल चरन-कमल मुनि-बंदित,
मंगल कीरति जगत-निवास।
अनुदिन मंगल ध्यान धरत मुनि,
मंगल-मति परमानँददास॥

[५]

मंगलरूप जसोदानंद।
मंगल मुकुट, श्रवनमें कुंडल,
मंगल तिलक बिराजत चंद॥
मंगल भूषन सब अँग सोहत,
मंगल-मूरति आनँदकंद।
मंगल लकुट काँखमें चाँपै,
मंगल मुरलि बजावत मंद॥
मंगल चाल मनोहर, मंगल
दरसन होत मिटै दुःख-द्वंद।
मंगल ब्रजपति नाम सबन को,
मंगल जस गावत श्रुति-छंद॥

[६]

सब बिधि मंगल नँद को लाल।
कमल-नयन! बलि जाय जसोदा,
न्हात खिजो जिन मेरे बाल॥
मंगल गावत मंगल मूरति
मंगल लीला ललित गुपाल।

मंगल ब्रजबासिनके घर-घर,
नाचत-गावत दे कर ताल॥
मंगल बृन्दावन के रंजन,
मंगल मुरली शब्द रसाल।
मंगल जस गावै परमानँद,
सखा मंडली मध्य गुपाल॥

भगवान् श्रीगिरिधारी

आरती गोपिका-रमन गिरिधरनकी
निरख ब्रज-जुवति आनंद-भीनी।
मनि-खचित थार घनसार बाती बरै
ललित ललितादि सखि हाथ तीनी॥

बिहरत श्रीकुंज सुख पुंज पिय संग मिलि
बिबिध भोजन किएँ रुचि नवीनी।
प्रगट परमानंद नवल विट्ठलनाथ
दास गोपाल लघु कृपा कीनी॥

भगवान् श्रीगिरिधारी

जय जय गिरिधारी प्रभु,
जय जय गिरिधारी।
दानव-दल-बलहारी,
गो-द्विज-हितकारी ॥ जय० ॥
जय गोविन्द दयानिधि,
गोवर्धन-धारी ।
वंशीधर बनवारी
ब्रज-जन-प्रियकारी ॥ जय० ॥
गणिका-गीध-अजामिल-
गजपति-भयहारी ।
आरत-आरति-हारी,
जग-मंगल-कारी ॥ जय० ॥
गोपालक, गोपेश्वर,
द्रौपदि-दुखदारी ।
शबर-सुता-सुखकारी,
गौतम-तिय तारी ॥ जय० ॥
जन-प्रह्लाद-प्रमोदक,
नरहरि-तनु-धारी ।
जन-मन-रञ्जनकारी,
दिति-सुत-संहारी ॥ जय० ॥

टिट्टिभ-सुत-संरक्षक
रक्षक मंझारी।
पाण्डु-सुवन-शुभकारी
कौरव-मद-हारी ॥ जय० ॥

मन्मथ-मन्मथ मोहन,
मुरली-रव-कारी ।
वृन्दाविपिन-विहारी
यमुना-तट-चारी ॥ जय० ॥

अघ-बक-बकी उधारक,
तृणावर्त-तारी ।
बिधि-सुरपति-मदहारी,
कंस-मुक्तिकारी ॥ जय० ॥

शेष, महेश, सरस्वति
गुन गावत हारी।
कल कीरति-बिस्तारी
भक्त-भीति-हारी ॥ जय० ॥

'नारायण' शरणागत,
अति अघ, अघहारी।
पद-रज पावनकारी
चाहत चितहारी ॥ जय० ॥

भगवान् यशोदालाल

आरति करत यसोदा प्रमुदित,
फूली अंग न मात।
बल-बल कहि दुलरावत
आनँद मगन भई पुलकात॥

सुबरन-थार रत्न-दीपावलि
चित्रित घृत-भीनी बात।
कल सिंदूर दूब दधि अच्छत
तिलक करत बहु भाँत॥

अन्न चतुर्विध बिबिध भोग
दुंदुभि बाजत बहु जात।
नाचत गोप कुंकुमा छिरकत
देत अखिल नगदात॥

बरसत कुसुम निकर-सुर-नर-मुनि
व्रजजुवती मुसकात।
कृष्णदास-प्रभु गिरधरको (श्री) मुख
निरख लजत ससि-काँत॥

भगवान् मुरलीधर

लटकत चलत जुवति-सुखदानी।
संध्या समै सखामंडलमें शोभित,
तन गो-रज लपटानी॥
मोर-मुकुट, गुंजा, पीरो पट,
मुख मुरली गुंजत मृदु बानी।
चत्रभुज-प्रभु गिरिधर आए बनतें
लै आरति वारत नंदरानी॥
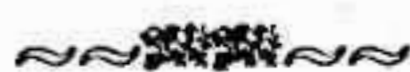
भगवान् कुंजबिहारी

आनँद आज कुंजके द्वार।
सखी सकल मिलि मंगल गावत,
नयनन निरखत नंद-दुलार॥
नव-नव बसन नवल, नव-
भूषन, पुष्प, दाम सिंगार।
सुभ मंडपमें रुचिर बिराजत-
मनमोहन सँग (श्री) राधा नार॥
दीपमालिका रची चहूँ दिसि,
जगमगात अँग ज्योति अपार।
वारि आरती जुगल रूप पर
परमानंद दास बलिहार॥
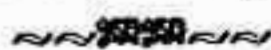
भगवान् कुंजबिहारी

आरती कुंजबिहारीकी ।
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥ (टेक)
गलेमें बैजंतीमाला,
बजावै मुरलि मधुर बाला।
श्रवनमें कुण्डल झलकाला,
नंदके आनँद नँदलाला॥
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
गगन सम अंग कांति काली,
राधिका चमक रही आली,
लतनमें ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-
तिलक, चंद्र-सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारीकी।
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै,
देवता दरसनकों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग, मधुर-
मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी।
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

जहाँ ते प्रगट भई गंगा,
सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह-भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच,
हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी।
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

चमकती उज्ज्वल तट रेनू,
बज रही बृन्दाबन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद,
कटत भव-फंद,
टेर सुनु दीन दुखारीकी।
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥
आरती कुंजबिहारीकी।
श्रीगिरधर कृष्नमुरारीकी॥

भगवान् राधा-कृष्ण

बैठे कुंज-मँडपमें आइ।
रच्यो सँवार सखी-ललितादिक,
यह सोभा कछु बरनि न जाइ॥
दीपमालिका रुचिर बनाई
घृत-परिपूरनताइ ।
धूप-दीप कर, फूल-माल धर,
नाना व्यंजन सुभग कराइ॥
गावत मंगल-गीत सकल मिल,
नँदनंदन पियदेव मनाइ।
वार आरती जुगल रूप पर,
चत्रभुजदास बारनें जाइ॥
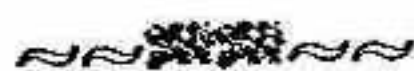
भगवान् राधिकानाथ

आरती वारत राधिका नागरी।
तन कनक थार, भूषन रत्नदीपक लिएँ,
कमल मुक्तावली मंगल उजागरी॥
रुषित कटि मेखला सुभग घंटावली
झालर संख बाजत जे करत उच्चागरी।
अनुराग छत्र अंचल चमर नयन चल
भाव कुसुमांजली चतुर गुन आगरी॥

सखी-जूथन लिएँ बिबिध भोजन किएँ,
सुखद गिरिबरधरन रिझवत सुहाग री।
जयति बिष्नुस्वामी पथ पावन श्रीबल्लभपद
पद्म बर नमत कृष्नदास बड़भाग री॥

भगवान् युगलकिशोर

आरति जुगलकिसोरकी कीजै,
तन मन धन न्योछावर कीजै॥
गौर स्याम मुख निरखन कीजै,
प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै।
रबि ससि कोटि बदनकी सोभा,
ताहि देखि मेरो मन लोभा॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहै,
नटवर वेष निरख मन मोहै।
ओढ़ें पीत नील पट सारी,
कुंजन ललना-लालबिहारी॥
श्रीपुरुषोत्तम गिरिबरधारी,
आरति करत सकल ब्रजनारी।
नँदनंदन बृषभानु-किसोरी,
परमानँद प्रभु अबिचल जोरी॥
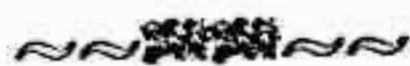
भगवान् श्रीव्रजनन्दन

करत आरती नवव्रजनारी।
अगर कपूर सुगंधित बूका
बिबिध भाँतिकी सौंझ सँवारी॥
घंटा झालर शंख नृसिंहा,
बिजै घंट धुनि परम सुखारी।
बंशी बीन मृदंग तँबूरा
सहनाई बाजत है न्यारी॥
बरसत फूल गगनसों सुरगन
देवबधू नाचत दै तारी।
हरषत सखी करत न्योछावर
नारायण होवैं बलिहारी॥

भगवान् श्रीगोपालजी

जय जय आरति श्रीगोपालकी।
आनँदकंद सकल सुखसागर
नवनागर नँदलालकी॥
सव्य अंग वृषभानुनंदिनी
चहुँदिसि गोपीमालकी।
जय श्रीभट्ट बार-बार बलिहारी
श्रीराधानामिनि बालकी॥

भगवान् श्रीराधा-कृष्ण

ॐ जय श्री राधा, जय श्री कृष्ण,

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

चंद्रमुखी चंचल चितचोरी। (राधा)

सुघर साँवरा सूरत भोरी॥ (कृष्ण)

श्यामा-श्याम एक-सी जोरी। (राधाकृष्ण)

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

पचरँग चूनर केसर क्यारी। (राधा)

पट पीतांबर कामर कारी॥ (कृष्ण)

एकरूप अनुपम छबि प्यारी। (राधाकृष्ण)

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

चंद्र-चंद्रिका चमचम चमकै। (राधा)

मोर मुकुट सिर दमदम दमकै॥ (कृष्ण)

युगल-प्रेम रस झमझम झमकै। (राधाकृष्ण)

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,

श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥

कस्तूरी-कुंकुम जुत बिंदा। (राधा)
चंदन चारु तिलक ब्रज चंदा॥ (कृष्ण)
सुहृद-लाड़ली लाल सुनंदा। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

घूँमघुमारो घाँघर सोहै। (राधा)
कटिकछनी कमलापति सोहै॥ (कृष्ण)
कमलासन सुर-मुनि-मन मोहै। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

रत्नजटित आभूषण सुंदर। (राधा)
कौस्तुभमणि कमलांकित नटवर॥ (कृष्ण)
रणत्क्वणत् मुरली-ध्वनि मनहर। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

मंद हँसन मतवारे नैना। (राधा)
मनमोहन मन हारे सैना॥ (कृष्ण)
मृदु मुसुकावनि मीठे बैना। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
श्रीराधा भव-बाधा-हारी। (राधा)
संकट-मोचन कृष्ण मुरारी॥ (कृष्ण)
एक शक्ति, एकहि आधारी। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
जगज्ज्योति जगजननी माता। (राधा)
जगजीवन, जग-पितु जग-दाता॥ (कृष्ण)
जगदाधार, जगद्विख्याता। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
राधा राधा कृष्ण कन्हैया। (राधा)
भव-भय सागर पार लगैया॥ (कृष्ण)
मंगल-मूरति, मोक्ष-करैया। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

सर्वेश्वरी सर्व-दुख-दाहन। (राधा)
त्रिभुवनपति, त्रयताप-नसावन॥ (कृष्ण)
परम देवि, परमेश्वर पावन। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

त्रिसमय युगलचरण चित ध्यावै।
सो नर जगत परमपद पावै॥
राधाकृष्ण 'छैल' मन भावै।
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण,
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

श्रीराधिका-वन्दन

व्रजराजकुमारवल्लभा
कुलसीमन्तमणि प्रसीद मे।
परिवारगणस्य ते यथा
पदवी मे न दवीयसी भवेत्॥
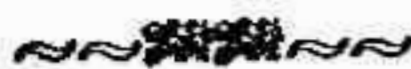
श्रीराधाजी

आरति श्रीवृषभानुसुताकी।
मंजु मूर्ति मोहन-ममताकी॥टेक॥

त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनि,
विमल विवेकविराग विकासिनि,
पावन प्रभु-पद-प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दरतम छबि सुन्दरताकी॥

मुनि-मन-मोहन मोहन-मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरलप्रेम-अमिय-रस-दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी॥

संतत सेव्य संत-मुनि-जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन-गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण-तन-मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी॥

कृष्णात्मिका, कृष्ण-सहचारिणि,
चिन्मयवृन्दा-विपिन-विहारिणि,
जगज्जननि जग-दुःखनिवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी॥

श्रीराधिकाजी

आरति श्रीवृषभानुललीकी।
सत-चित-आनँद-कन्द-कलीकी ॥ टेक॥

भयभंजिनि भव-सागर-तारिणि,
पाप-ताप-कलि-कल्मष-हारिणि,
दिव्यधाम गोलोक-विहारिणि,
जनपालिनि जगजननि भलीकी॥

अखिल विश्व-आनन्द-विधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नंदनँदन-पदप्रेम प्रदायिनि,
अमिय-राग-रस रंग-रलीकी॥

नित्यानन्दमयी आह्लादिनि,
आनँदघन-आनंद-प्रसाधिनि ,
रसमयि, रसमय-मन-उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्ण-अलीकी॥

नित्य निकुंजेश्वरि राजेश्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेश्वरि,
गोपिगणाश्रयि गोपिजनेश्वरि,
विमल विचित्र भाव-अवलीकी॥

भगवान् शंकर

कर्पूरगौरं करुणावतारं
संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानीसहितं नमामि॥
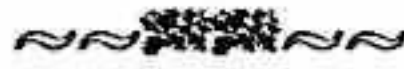
भगवान् गङ्गाधर

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीशा।
त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीशा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।
गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने॥
कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।
रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

तस्मिंल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।
तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता॥
क्रीडा रचयति भूषारञ्जित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

विबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वरसहिता॥
धिनकत थै थै धिनकत मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणुं मधुरं नाटयते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलिता।
चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक तां॥
तां तां लुप चुप तां तां डमरू वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

कर्पूरद्युतिगौरं पञ्चाननसहितम्।
त्रिनयनशशिधरमौलिं विषधरकण्ठयुतम्॥
सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं करधृतनृकपालम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

मुण्डै रचयति माला पन्नगमुपवीतम्।
वामविभागे गिरिजारूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम्।
इति वृषभध्वजरूपं तापत्रयहरणम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

शङ्खनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते।
नीराजयते ब्रह्मा वेद-ऋचां पठते॥

अतिमृदुचरणसरोजं हृत्कमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं ईशं अभिनत्वा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

ध्यानं आरति समये हृदये अति कृत्वा।
रामस्त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते।
शिवसायुज्यं गच्छति भक्त्या यः शृणुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥

भगवान् महादेव

हर हर हर महादेव!
सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव ! सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज, अन्तर्यामी॥
हर हर हर महादेव॥

आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी॥
हर हर हर महादेव॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्ता, भर्ता, धर्ता तुम ही संहारी॥
हर हर हर महादेव॥

रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय, औढरदानी।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता, अभिमानी॥
हर हर हर महादेव॥

मणिमय-भवन निवासी, अति भोगी, रागी।
सदा श्मशान विहारी, योगी वैरागी॥
हर हर हर महादेव॥
छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल, व्याली।
चिताभस्मतन, त्रिनयन, अयनमहाकाली॥
हर हर हर महादेव॥
प्रेत-पिशाच-सुसेवित, पीतजटाधारी।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयकारी॥
हर हर हर महादेव॥
शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि-मन-हारी॥
हर हर हर महादेव॥
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय, नित्य-प्रभो।
कालरूप केवल हर! कालातीत विभो॥
हर हर हर महादेव॥
सत्, चित्, आनँद, रसमय, करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व त्राता॥
हर हर हर महादेव॥
हम अतिदीन, दयामय! चरण-शरण दीजै।
सब बिधि निर्मल मति कर अपना कर लीजै॥
हर हर हर महादेव॥

भगवान् श्रीशिवशंकर

हरि कर दीपक, बजावें संख सुरपति,
गनपति झाँझ, भैरों झालर झरत हैं।
नारदके कर बीन, सारदा गावत जस,
चारिमुख चारि वेद बिधि उचरत हैं॥

षटमुख रटत सहस्त्रमुख सिव सिव,
सनक-सनंदनादि पाँयन परत हैं।
'बालकृष्ण' तीनि लोक, तीस और तीनि कोटि,
एते शिव-शंकरकी आरति करत हैं॥
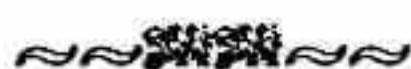
भगवान् श्रीशंकर

जयति जयति जग-निवास, शंकर सुखकारी॥

अजर अमर अज अरूप,
सत चित आनंदरूप,
व्यापक ब्रह्मस्वरूप,
भव! भव-भय-हारी॥जयति०॥

शोभित बिधुबाल भाल,
सुरसरिमय जटाजाल,
तीन नयन अति विशाल,
मदन-दहन-कारी ॥जयति०॥

भक्तहेतु धरत शूल,
करत कठिन शूल फूल,
हियकी सब हरत हूल
अचल शान्तिकारी॥ जयति०॥

अमल अरुण चरणकमल
सफल करत काम सकल,
भक्ति-मुक्ति देत विमल,
माया-भ्रम-टारी ॥ जयति०॥

कार्तिकेययुत गणेश,
हिमतनया सह महेश,
राजत कैलास-देश,
अकल कलाधारी॥ जयति०॥

भूषण तन भूति ब्याल,
मुण्डमाल कर कपाल,
सिंह-चर्म हस्ति खाल,
डमरू कर धारी॥ जयति०॥

अशरण जन नित्य शरण,
आशुतोष आर्तिहरण,
सब बिधि कल्याण-करण
जय जय त्रिपुरारी॥ जयति०॥

भगवान् कैलासवासी

शीश गंग अर्धंग पार्वती
सदा विराजत कैलासी।
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं,
धरत ध्यान सुर सुखरासी॥
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बह
बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्त स्वर
राग रागिनी मधुरासी॥
यक्ष-रक्ष-भैरव जहँ डोलत,
बोलत हैं वनके वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर,
भ्रमर करत हैं गुंजा-सी॥
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु
लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिन जहँ डोलत
करत दुग्धकी वर्षा-सी॥
सूर्यकान्त सम पर्वत शोभित,
चन्द्रकान्त सम हिमराशी।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित
सेवत सदा प्रकृति-दासी॥

ऋषि-मुनि देव दनुज नित सेवत,
गान करत श्रुति गुणराशी।
ब्रह्मा-विष्णु निहारत निसिदिन
कछु शिव हमकूँ फरमासी॥
ऋद्धि सिद्धिके दाता शंकर
नित सत् चित् आनँदराशी।
जिनके सुमिरत ही कट जाती
कठिन काल-यमकी फाँसी॥
त्रिशूलधरजीका नाम निरंतर
प्रेम सहित जो नर गासी।
दूर होय विपदा उस नर की
जन्म-जन्म शिवपद पासी॥
कैलासी काशीके वासी
अविनाशी मेरी सुध लीजो।
सेवक जान सदा चरननको
अपनो जान कृपा कीजो॥
तुम तो प्रभुजी सदा दयामय
अवगुण मेरे सब ढकियो।
सब अपराध क्षमाकर शंकर
किंकरकी विनती सुनियो॥

भगवान् श्रीभोलेनाथजी

अभयदान दीजै दयालु प्रभु
सकल सृष्टिके हितकारी।
भोलेनाथ भक्त-दुखगंजन
भवभंजन शुभ सुखकारी॥

दीनदयालु कृपालु कालरिपु
अलखनिरंजन शिव योगी।
मंगल रूप अनूप छबीले
अखिल भुवनके तुम भोगी॥
बाम अंग अति रँगरस-भीने
उमा-वदनकी छबि न्यारी॥
भोलेनाथ० ॥

असुर-निकंदन सब दुखभंजन
वेद बखाने जग जाने।
रुण्ड-माल गल व्याल भाल-
शशि नीलकंठ शोभा साने॥
गंगाधर त्रिशूलधर विषधर
बाघम्बरधर गिरिचारी॥
भोलेनाथ० ॥

यह भवसागर अति अगाध है
पार उतर कैसे बूझै।
ग्राह मगर बहु कच्छप छाये
मार्ग कहो कैसे सूझै॥
नाम तुम्हारा नौका निर्मल
तुम केवट शिव अधिकारी॥
भोलेनाथ० ॥

मैं जानूँ तुम सद्गुणसागर
अवगुण मेरे सब हरियो।
किंकरकी विनती सुन स्वामी
सब अपराध क्षमा करियो॥
तुम तो सकल विश्वके स्वामी
मैं हूँ प्राणी संसारी॥
भोलेनाथ० ॥

काम-क्रोध-लोभ अति दारुण
इनसे मेरो वश नाहीं।
द्रोह-मोह-मद संग न छोड़ै
आन देत नहिं तुम ताँई॥
क्षुधा-तृषा नित लगी रहत है
बढ़ी विषय तृष्णा भारी॥
भोलेनाथ० ॥

तुम ही शिवजी कर्ता हर्ता
तुम ही जगके रखवारे।
तुम ही गगन मगन पुनि
पृथिवी पर्वतपुत्रीके प्यारे॥
तुम ही पवन हुताशन शिवजी
तुम ही रवि-शशि तमहारी॥
भोलेनाथ० ॥

पशुपति अजर अमर अमरेश्वर
योगेश्वर शिव गोस्वामी।
वृषभारूढ़ गूढ़ गुरु गिरिपति
गिरिजावल्लभ निष्कामी॥
सुषमासागर रूप उजागर
गावत हैं सब नरनारी॥
भोलेनाथ० ॥

महादेव देवोंके अधिपति
फणिपति-भूषण अति साजै।
दीप्त ललाट लाल दोउ लोचन
उर आनत ही दुख भाजै॥
परम प्रसिद्ध पुनीत पुरातन
महिमा त्रिभुवन-विस्तारी॥
भोलेनाथ० ॥

ब्रह्मा-विष्णु-महेश-शेष मुनि-
नारद आदि करत सेवा।
सबकी इच्छा पूरन करते
नाथ सनातन हर देवा॥
भक्ति-मुक्तिके दाता शंकर
नित्य-निरंतर सुखकारी॥
भोलेनाथ० ॥

महिमा इष्ट महेश्वरकी
जो सीखे सुने नित्य गावै।
अष्टसिद्धि-नवनिधि सुखसम्पति
स्वामिभक्ति मुक्ती पावै॥
श्रीअहिभूषण प्रसन्न होकर
कृपा कीजिये त्रिपुरारी॥
भोलेनाथ० ॥
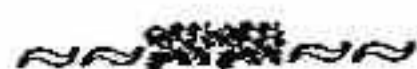
श्रीदेवी-वन्दना

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥
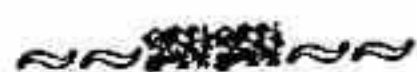
श्रीदेवीजी

जय जय देवि जयति जय, जय मोहिनिरूपे।
मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे॥
॥ ध्रुवपदम् ॥

प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्ये
पारावारविहारिणि नारायणि हृद्ये॥
प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये
प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये॥
जय जय० ॥

दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने
पदनखनिर्जितमदने मधुकैटभकदने।
विकसितपङ्कजनयने पन्नगपतिशयने
खगपतिवहने गहने सङ्कटवनदहने॥
जय जय० ॥

मञ्जीराङ्कितचरणे मणिमुक्ताभरणे
कञ्चुकिवस्त्रावरणे वक्त्राम्बुजधरणे।
शक्रामयभयहरणे भूसुरसुखकरणे
करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे॥
जय जय० ॥

छित्त्वा राहुग्रीवां पासि त्वं विबुधान्

ददासि मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान्।

विहरसि दानवऋद्धान् समरे संसिद्धान्

मध्वमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान्॥

जय जय० ॥
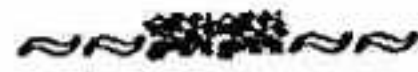
श्रीदेवीजी

जय जय, जगजननि देवि सुर-नर-मुनि-असुर-सेवि,

भुक्ति-मुक्ति-दायिनि भयहरणि कालिका।

मंगल-मुद-सिद्धि-सदनि, पर्वशर्वरीश-वदनि,

ताप-तिमिर तरुण-तरणि-किरणमालिका॥

वर्म-चर्म-कर-कृपाण शूल-शेल-धनुष-बाण-

धरणि, दलनि दानव-दल, रण-करालिका।

पूतना-पिशाच-प्रेत डाकिनि-शाकिनि-समेत

भूत-ग्रह-बेताल-खग-मृगालि-जालिका ॥

जय महेश-भामिनी अनेक-रूप-नामिनी,

समस्त-लोक-स्वामिनी हिमशैल-बालिका।

रघुपति-पद परम प्रेम, तुलसी यह अचल नेम,

देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रनतपालिका॥
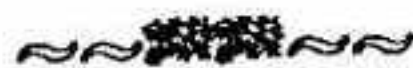
श्रीदुर्गाजी

जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!!
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय॥ टेक ॥

तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा॥ जग० ॥

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी॥ जग० ॥

अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी॥ जग० ॥

तू विधि-वधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी जाया॥ जग० ॥

राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम हारिणि सब बाधा॥ जग० ॥

दश विद्या, नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-रूप-धरा॥ जग० ॥

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू॥ जग० ॥

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥ जग० ॥

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥ जग० ॥

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ जग० ॥

शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ जग० ॥

हम अति दीन दुखी माँ! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ जग० ॥

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै॥ जग० ॥

श्रीअम्बाजी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री॥
जय अम्बे०॥

माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥
जय अम्बे०॥

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै॥
जय अम्बे०॥

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥
जय अम्बे०॥

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥
जय अम्बे०॥

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥
जय अम्बे०॥

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥
जय अम्बे०॥

ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी॥
जय अम्बे० ॥

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥
जय अम्बे० ॥

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता॥
जय अम्बे० ॥

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी॥
जय अम्बे० ॥

कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।
(श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती॥
जय अम्बे० ॥

(श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।
कहत शिवानँद स्वामी, सुख सम्पति पावै॥
जय अम्बे० ॥
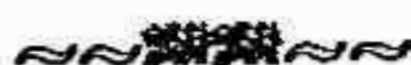
श्रीदेवीजी

आरति कीजै शैल-सुताकी। टेक ॥
जगदंबाकी आरति कीजै॥
स्नेह-सुधा, सुख सुन्दर लीजै॥
जिनके नाम लेत दृग भीजै।
ऐसी वह माता वसुधाकी॥आरति०॥

पाप-विनाशिनि कलि-मल-हारिणि।
दयामयी, भवसागरतारिणि॥
शस्त्र-धारिणी, शैल-विहारिणि।
बुद्धिराशि गणपति माताकी॥आरति०॥

सिंहवाहिनी मातु भवानी।
गौरव-गान करैं जगप्रानी॥
शिवके हृदयासनकी रानी।
करैं आरती मिल-जुल ताकी॥आरति०॥

श्रीज्वाला-काली देवीजी

'मंगल' की सेवा, सुन मेरी देवा!
हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान-सुपारी, ध्वजा-नारियल
ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥
सुन जगदम्बे न कर बिलंबे
संतनके भंडार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली
जै काली कल्याण करे॥ टेक॥
'बुद्ध' विधाता तू जगमाता
मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण-कमलका लिया आसरा
शरण तुम्हारी आन परे॥
जब-जब भीर पड़े भक्तनपर
तब-तब आय सहाय करे।
संतन प्रतिपाली०॥
'गुरु' के बार सकल जग मोह्यो
तरुणीरूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावै,
कहीं भार्या भोग करे॥

'शुक्र' सुखदाई सदा सहाई
संत खड़े जयकार करे।
संतन प्रतिपाली० ॥

ब्रह्मा विष्णु महेस फल लिये
भेंट देन तव द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता
सिर सोनेका छत्र फिरे ॥
वार 'शनिश्चर' कुंकुम बरणी,
जब लुंकड़पर हुकुम करे।
संतन प्रतिपाली० ॥

खड्ग खपर त्रैशूल हाथ लिये
रक्तबीजकूँ भस्म करे।
शुंभ निशुंभ क्षणहिमें मारे
महिषासुरको पकड़ दले ॥
'आदित' वारी आदि भवानी
जन अपनेका कष्ट हरे।
संतन प्रतिपाली० ॥

कुपित होय कर दानव मारे
चण्ड मुण्ड सब चूर करे।
जब तुम देखौ दयारूप हो,
पलमें संकट दूर टरे ॥

'सोम' स्वभाव धर्यो मेरी माता
जनकी अर्ज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली० ॥
सात बारकी महिमा बरनी
सब गुण कौन बखान करे।
सिंहपीठपर चढ़ी भवानी
अटल भवनमें राज्य करे॥
दर्शन पावें मंगल गावें
सिध साधक तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली० ॥
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे
शिवशंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करैं आरती
चमर कुबेर डुलाय करे॥
जय जननी जय मातु भवानी
अचल भवनमें राज्य करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली
जय काली कल्याण करे॥
संतन प्रतिपाली० ॥

धुन Change
करनी है
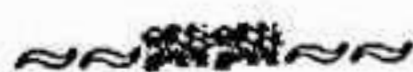
श्रीपर्वतवासिनी ज्वालाजी

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि
तेरा पार न पाया। टेक॥
पान सुपारी ध्वजा नारियल
ले तेरे भेंट चढ़ाया॥

सुवा चोली तेरे अंग विराजै
केसर तिलक लगाया।
नंगे पाँव तेरे अकबर जाकर
सोनेका छत्र चढ़ाया॥

ऊँचे-ऊँचे पर्वत बना देवालय
नीचे शहर बसाया।
सत्ययुग त्रेता द्वापर मध्ये
कलियुग राज सवाया॥

धूप दीप नैवेद्य आरती
मोहन भोग लगाया।
धानू भगत मैया (तेरा) गुण गावै
मन वाञ्छित फल पाया॥

श्रीसूर्य-वन्दना

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो
सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।
अनन्तशक्तिर्मणिभूषणेन
वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम्॥
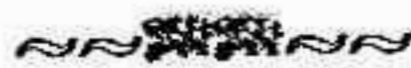
भगवान् सूर्य

जय कश्यप-नन्दन,
ॐ जय अदिति-नन्दन।
त्रिभुवन-तिमिर-निकन्दन
भक्त-हृदय-चन्दन॥ टेक ॥

सप्त-अश्वरथ राजित
एक चक्रधारी।
दुखहारी, सुखकारी,
मानस-मल-हारी॥ जय०॥

सुर-मुनि-भूसुर-वंदित,
विमल विभवशाली।
अघ-दल-दलन दिवाकर
दिव्य किरण माली॥ जय०॥

सकल-सुकर्म-प्रसविता
सविता शुभकारी।
विश्व-विलोचन मोचन
भव-बंधन भारी॥ जय०॥

कमल-समूह-विकासक,
नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज हरत
अति मनसिज-संतापा॥ जय०॥

नेत्र-व्याधि-हर सुरवर
भू-पीड़ा-हारी।
वृष्टि-विमोचन संतत
परहित-व्रतधारी॥ जय०॥

सूर्यदेव करुणाकर
अब करुणा कीजै।
हर अज्ञान-मोह सब
तत्त्वज्ञान दीजै॥ जय०॥

श्रीहनुमत्-वन्दन

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥

श्रीहनुमान्‌जी

जयति मंगलागार, संसार, भारापहर,
वानराकार विग्रह पुरारी।
राम-रोषानल, ज्वालमाला-
मिषध्वान्तचर-सलभ-संहारकारी॥
जयति मरुदंजनामोद-मंदिर,
नतग्रीवसुग्रीव-दुःखैकबंधो।
यातुधानोद्धत-क्रुद्ध-कालाग्निहर,
सिद्ध-सुर-सज्जनानंदसिंधो॥
जयति रुद्राग्रणी, विश्ववंद्याग्रणी,
विश्वविख्यात-भट-चक्रवर्ती।
सामगाताग्रणी, कामजेताग्रणी,
रामहित, रामभक्तानुवर्ती॥

जयति संग्रामजय, रामसंदेशहर,
कौशला-कुशल-कल्याणभाषी।
राम-विरहार्क-संतप्त-भरतादि-
नर-नारि-शीतलकरणकल्पशाषी॥
जयति सिंहासनासीन सीतारमण,
निरखि निर्भर हरष नृत्यकारी।
राम संभ्राज शोभा-सहित सर्वदा
तुलसि-मानस-रामपुर-विहारी॥

श्रीहनुमान्‌जी

मंगल-मूरति मारुत-नंदन।
सकल-अमंगल-मूल-निकंदन॥
पवन-तनय संतन-हितकारी।
हृदय विराजत अवध बिहारी॥
मातु-पिता, गुरु गनपति, सारद।
सिवा-समेत संभु, सुक-नारद॥
चरन बंदि बिनवौं सब काहू।
देहु रामपद-नेह-निबाहू॥
बंदौं राम-लखन-बैदेही।
जे तुलसीके परम सनेही॥
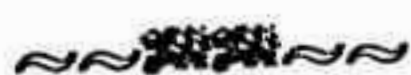
श्रीहनुमान्जी

वन्दे सन्तं श्रीहनुमन्तं
रामदासममलं बलवन्तम्।
रामकथामृतमधु निपिबन्तं
परमप्रेमभरेण नटन्तम्॥

प्रेमरुद्धगलमश्रुवहन्तं
पुलकाञ्चितवपुषा विलसन्तम्।
सर्वं राममयं पश्यन्तं
राघवनाम सदा प्रजपन्तम्॥

कदाचिदानन्देन हसन्तं
क्वचित् कदाचिदपि प्ररुदन्तम्।
सद्भक्तिपथं समुपदिशन्तं
विठ्ठलपन्तं प्रति सुखयन्तम्॥

श्रीअंजनीकुमारजी

आरति श्रीअंजनिकुमारकी।
शिवस्वरूप मारुतनन्दन,
केसरी-सुअन कलियुग-कुठारकी॥
हियमें राम-सीय नित राखत,
मुखसों राम-नाम-गुण भाखत,
सुमधुर भक्ति-प्रेम-रस चाखत,
मङ्गलकर मङ्गलाकारकी॥आरति०॥
विस्मृत-बल-पौरुष, अतुलित बल,
दहन दनुज-वन हित, दावानल,
ज्ञानि-मुकुट-मणि,पूर्ण गुण सकल,
मंजु भूमिशुभ सदाचारकी॥आरति०॥
मन-इन्द्रिय-विजयी, विशाल मति,
कलानिधान, निपुण गायक अति,
छन्द-व्याकरण-शास्त्र अमित गति,
रामभक्त अतिशय उदारकी॥आरति०॥
पावन परम सुभक्ति प्रदायक,
शरणागतको सब सुखदायक,
विजयी वानर-सेना-नायक,
सुगति-पोतके कर्णधारकी॥आरति०॥

श्रीहनुमान्‌ललाजी

आरती कीजै हनुमानललाकी।
दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी॥ टेक॥
जाके बलसे गिरिवर काँपै।
रोग दोष जाके निकट न झाँपै॥
अंजनिपुत्र महा बलदाई।
संतनके प्रभु सदा सहाई॥
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सीय सुधि लाये॥
लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥
लंका जारि असुर संहारे।
सीतारामजीके काज सँवारे॥
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि सजीवन प्रान उबारे॥
पैठि पताल तोरि जम-कारे।
अहिरावनकी भुजा उखारे॥
बायें भुजा असुरदल मारे।
दहिने भुजा संतजन तारे॥

सुर नर मुनि आरती उतारे।
जय जय जय हनुमान उचारे॥
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरति करत अंजना माई॥
जो हनुमानजीकी आरति गावै।
बसि बैकुंठ परम पद पावै॥

श्रीगङ्गा-वन्दन

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥

श्रीगङ्गाजी

जय जय भगीरथनंदिनि, मुनि-चय चकोर-चंदिनि,
नर-नाग-बिबुधबंदिनि, जय जह्नुबालिका।

विष्णु-पद-सरोजजासि, ईस-सीस पर बिभासि,
त्रिपथगासि, पुन्यरासि, पाप-छालिका॥

बिमल बिपुल बहसि बारि, सीतल त्रयताप-हारि,
भँवर बर बिभंगतर तरंग-मालिका।

पुरजन-पूजोपहार-सोभित ससि-धवल धार,
भंजन भव-भार, भक्ति-कल्प-थालिका॥

निज तट बासी बिहंग, जल-थल-चर पसु-पतंग,
कीट, जटिल तापस, सब सरिस पालिका।

तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुबंस-बीर,
बिचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका॥
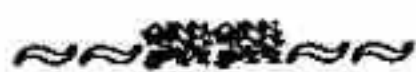
श्रीगङ्गाजी

हरनि पाप त्रिबिध ताप सुमिरत सुरसरित,
बिलसति महि कल्प-बेलि मुद-मनोरथ फरित॥

सोहत ससि-धवल धार सुधा-सलिल-भरित
बिमलतर तरंग लसत रघुबरके-से चरित॥

तो बिनु जगदंब गङ्ग कलियुग का करित?
घोर भव-अपार सिंधु तुलसी किमि तरित॥

श्रीगङ्गाजी

जय गङ्गा मैया-माँ जय सुरसरि मैया।
भव-वारिधि उद्धारिणि अतिहि सुदृढ़ नैया॥

हरि-पद-पद्म-प्रसूता विमल वारिधारा।
ब्रह्मद्रव भागीरथि शुचि पुण्यागारा॥

शंकर-जटा बिहारिणि हारिणि त्रय-तापा।
सगर-पुत्र-गण-तारिणि, हरणि सकल पापा॥

'गङ्गा-गङ्गा' जो जन उच्चारत मुखसों।
दूर देशमें स्थित भी तुरत तरत सुखसों॥

मृतकी अस्थि तनिक तुव जल-धारा पावै।
सो जन पावन होकर परम धाम जावै॥

तव तटबासी तरुवर, जल-थल-चरप्राणी।
पक्षी-पशु-पतंग गति पावैं निर्वाणी॥

मातु! दयामयि कीजै दीननपर दाया।
प्रभु-पद-पद्म मिलाकर हरि लीजै माया॥

श्रीयमुना-वन्दन

मुरारिकायकालिमा ललामवारिधारिणी
तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी।
मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा
धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा॥
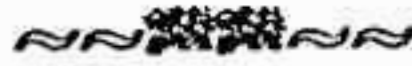
श्रीयमुनाजी

जय कालिंदी, हरिप्रिया जय।
जय रबि-तनया, तपोमयी जय॥

जय श्यामा, अति अभिरामा जय।
जय सुखदा श्रीहरि रामा जय॥

जय ब्रज-मण्डल-वासिनि जय जय।
जय द्वारकानिवासिनि जय जय॥

जय कलि-कलुष-नसावनि जय जय।
जय यमुने जय पावनि, जय जय॥

जय निर्वाण-प्रदायिनि जय जय।
जय हरि-प्रेम-दायिनी जय जय॥

श्रीनर्मदाजी

जय जय नर्मद ईश्वरि मेकलसंजाते।
नीराजयामि नाशिततापत्रयजाते॥ टेक॥

वारितसंसृतिभीते सुरवरमुनिगीते।
सुखदे पावनकीर्ते शङ्करतनुजाते॥
देवापगाधितीर्थे दत्ताग्र्यपुमर्थे।
वाचामगम्यकीर्ते जलमयसन्मूर्ते॥
जय जय०॥

नन्दनवनसमतीरे स्वादुसुधानीरे।
दर्शितभवपरतीरे दमितांतकसारे॥
सकलक्षेमाधारे वृतपारावारे।
रक्षास्मानतिघोरे मग्नान् संसारे॥
जय जय०॥

स्वयशःपावितजीवे मामुद्धर रेवे।
तीरं ते खलु सेवे त्वयि निश्चितभावे॥
कृतदुष्कृतदवदावे त्वत्पदराजीवे।
तारक इह मेऽतिजवे भक्त्या ते सेवे॥
जय जय०॥

भगवान् श्रीबदरीनाथजी

जय जय श्रीबदरीनाथ जयति योग-ध्यानी॥
टेक॥

निर्गुण सगुण स्वरूप, मेघवर्ण अति अनूप,
सेवत चरण सुरभूप, ज्ञानी विज्ञानी॥
जय जय० ॥

झलकत है शीश छत्र, छबि अनूप अति विचित्र,
बरनत पावन चरित्र सकुचत बरबानी॥
जय जय० ॥

तिलक भाल अति विशाल, गलमें मणि-मुक्त-माल,
प्रनतपाल अति दयाल, सेवक सुखदानी॥
जय जय० ॥

कानन कुंडल ललाम, मूरति सुखमाकी धाम,
सुमिरत हों सिद्धि काम, कहत गुण बखानी॥
जय जय० ॥

गावत गुण शंभु, शेष, इन्द्र, चन्द्र अरु दिनेश,
विनवत श्यामा हमेश जोरि जुगल पानी॥
जय जय० ॥
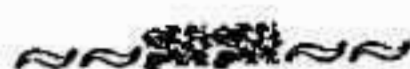
श्रीबदरीनाथ-स्तुति

पवन मंद सुगंध शीतल,
हेममन्दिर शोभितम्।
निकट गङ्गा बहत निर्मल,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

शेष सुमिरन करत निशिदिन
ध्यान धरत महेश्वरम्।
श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर,
धूप दीप निवेदितम्।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

शक्ति गौरि गणेश शारद,
नारद मुनि उच्चारणम्।
योग ध्यान अपार लीला,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक,
गान गन्धर्व प्रकाशितम्।
श्रीभूमि लक्ष्मी चँवर डोलैं,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

कैलासमें एक देव निरंजन,
शैल-शिखर महेश्वरम्।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति,
श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम्॥

श्रीबदरीनाथ (जी) की परम स्तुति
यह पढ़त पाप विनाशनम्।
कोटि-तीर्थ सुपुण्य सुन्दर
सहज अति फलदायकम्॥

श्रीबदरीनाथ-महिमा

तुहिन गिरिमधि परम सुखप्रद
आश्रमं अतिशोभितम्।
जहँ बसत सब सुर मुकुटमणि
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

बहत सुरसरि-धार निर्मल
अघसमूह निकन्दनम्।
सिद्ध-मुनि-सुर करत जय जय
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

चलत मंद सुगन्ध शीतल
वायु, पुष्प सुशोभितम्।
शक्ति-शेष-महेश सुमिरत
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

वदत सनकादिक महामुनि
वेदवाक्य निरन्तरम्।
ब्रह्म-नारद करत स्तुति
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

सकल जगदाधार व्यापक
ब्रह्म अलख अनामयम्।
जगत व्याप्त अपार महिमा
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

इन्द्र उद्धव चन्द्र रवि
गन्धर्व सेवत तत्परम्।
करत कमला सतत सेवा
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

योग साधत योगि निशिदिन
ज्योति निरखत संततम्।
कृपा कीजै भक्तजन पर
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

अज अनामय ईश गो-
द्विजपालकं सुर वन्दितम्।
विश्वपालक असुर-घालक
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

जपत निशिदिन नाम तव जो
लहत भक्ति सुजीवनम्।
दासपर करु कृपा संतत
श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम्॥

श्रीबदरीनाथाष्टकम्

भू-वैकुण्ठकृतावासं देवदेवं जगत्पतिम्।
चतुर्वर्गप्रदातारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

तापत्रयहरं साक्षाच्छान्तिपुष्टिबलप्रदम्।
परमानन्ददातारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

सद्यः पापक्षयकरं सद्यः कैवल्यदायकम्।
लोकत्रयविधातारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

भक्तवाञ्छाकल्पतरुं करुणारसविग्रहम्।
भवाब्धिपारकर्तारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

सर्वदेवनुतं शश्वत् सर्वतीर्थास्पदं विभुम्।
लीलयोपात्तवपुषं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

अनादिनिधनं कालकालं भीमयमच्युतम्।
सर्वाश्चर्यमयं देवं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

गन्धमादनकूटस्थं नरनारायणात्मकम्।
बदरीखण्डमध्यस्थं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

शत्रूदासीनमित्राणां सर्वज्ञं समदर्शिनम्।
ब्रह्मानन्दचिदाभासं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम्॥

श्रीबद्रीशाष्टकमिदं यः पठेत्प्रयतः शुचिः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स शान्तिं लभते पराम्॥

श्रीगोमाता

आरति श्रीगैया-मैयाकी।
आरति-हरनि विश्वधैयाकी॥ टेक ॥
अर्थकाम-सद्धर्म-प्रदायिनि ।
अविचल अमल मुक्तिपददायिनि।
सुर-मानव सौभाग्यविधायिनि,
प्यारी पूज्य नंद-छैयाकी॥ आरति० ॥
अखिल विश्व प्रतिपालिनि माता,
मधुर अमिय दुग्धान्न प्रदाता।
रोग-शोक-संकट परित्राता,
भवसागर हित दृढ़ नैयाकी॥ आरति० ॥
आयु-ओज-आरोग्यविकाशिनि,
दुःख-दैन्य-दारिद्र्य-विनाशिनि।
सुषमा-सौख्य-समृद्धि-प्रकाशिनि,
विमल विवेक-बुद्धि-दैयाकी॥ आरति० ॥
सेवक हो, चाहे दुखदाई,
सम पय-सुधा पियावति माई।
शत्रु-मित्र सबको सुखदाई,
स्नेह-स्वभाव-विश्व-जैयाकी॥ आरति० ॥

श्रीमद्भागवत

आरति अतिपावन पुरानकी,
धर्म-भक्ति-विज्ञान-खानकी ॥ टेक ॥

महापुराण भागवत निर्मल।
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल।
परमानन्दसुधा-रसमय कल।
लीला-रति-रस-रसनिधानकी ॥ आरति० ॥

कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणि।
जन्ममृत्युमय भव-भयहारिणि।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि।
सुमहौषधि हरि-चरित गानकी ॥ आरति० ॥

विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि ।
विमल विराग विवेक विकाशिनि।
भगवत्-तत्त्व-रहस्य-प्रकाशिनि ।
परम ज्योति परमात्मज्ञानकी ॥ आरति० ॥

परमहंस-मुनि-मन-उल्लासिनि ।
रसिक-हृदय रस-रास-विलासिनि।
भुक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम-सुदासिनि ।
कथा अकिञ्चन प्रिय सुजानकी ॥ आरति० ॥

श्रीमद्भगवद्गीता

मत्वा मोहात् पार्थो निजधर्मे पापम्।
युद्धाद्विरतः शोचन् भुवि निदधे चापम्॥
त्वत्तो लब्ध्वा मोहध्वंसकरीं दृष्टिम्।
भीष्मद्रोणादिषु युधि चक्रे शरवृष्टिम्।
जय जय जगदभिवन्द्ये जय भगवद्गीते॥ टेक॥

काण्डेषु त्रिषु भगवान् यान्यवदद् वेदः।
सूक्ष्मधियामपि येषां दुरवगमो भेदः॥
तेषां कर्मोपास्तिज्ञानानां हृदयम्।
स्पष्टं प्रकटीकुरुषे मातस्त्वं सदयम्॥ जय जय०॥

जनयसि हृदि मन्दानां निजधर्मासक्तिम्।
दृढयसि मध्यानां श्रीहरिचरणे भक्तिम्॥
निर्मलमनसः केचन विन्दन्त्यपि मुक्तिम्।
ध्यायन्त्यनिशं ये तव गम्भीरामुक्तिम्॥ जय जय०॥

त्यक्त्वा कर्मफलेष्वभिसंधिमहंकारम्।
कृष्णार्पणबुद्ध्या कुरु विधिविहिताचारम्॥
इत्युपदेशं हृदये तव कुर्वञ्जन्तुः।
तीर्त्वा भवसिन्धुं पदमाप्नोत्यघहन्तुः॥ जय जय०॥

प्राहुस्त्वां सर्वासामुपनिषदां सारम्।
कुर्वन्ति त्वां कृतिनः कण्ठालंकारम्।
केशवमुखजन्मैका त्वं पुंसां शरणम्।
तटिनी सान्या यस्याः प्रभवस्तच्चरणम्॥ जय जय०॥
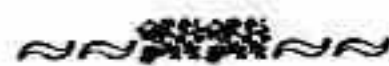
श्रीमद्भगवद्गीता

आरति श्रीभगवद्गीताकी ॥ टेक ॥

वासुदेव-श्रीमुखकी बानी,
आध्यात्मिक कृतियनकी रानी,
विजय-विभूति-मुक्तिकी दानी,
मुद-मंगलमय सुपुनीताकी ॥ आरति० ॥

महाभारते व्यासविगुम्फित,
समराङ्गणमें पार्थ प्रबोधित,
सुर-नर-मुनि सबही सों वन्दित,
पाप-पुञ्ज-कुञ्जर-चीताकी ॥ आरति० ॥

मर्म त्यागको सत्य सुझावनि,
दुरित द्वैत दुख दूरि नसावनि,
अद्वैतामृत-धार बहावनि,
भव-दसकन्ध सती सीताकी ॥ आरति० ॥

उपनिषदनको सार सुहावन,
अनासक्त शुभ काज करावन,
मन-वच-कर्म संत-मन-भावन,
भक्ति-ज्ञान-जुग जग-जीताकी ॥ आरति० ॥

रवि-कर भ्रम-तम-तोम-निवारिणि,
विमल-विवेक विश्व विस्तारिणि,
सुमति-सुधर्म-सुराज्य प्रचारिणि,
'दामोदर' अनुपम गीताकी ॥ आरति० ॥

श्रीमद्भगवद्गीता

जय भगवद्गीते, माँ जय भगवद्गीते।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते॥ टेक ॥

कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि कामासक्तिहरा।
तत्त्व-ज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म-परा॥ जय० ॥

निश्चल-भक्ति-विधायिनिनिर्मल मलहारी।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी॥ जय० ॥

राग-द्वेष-विदारिणि कारिणि मोद सदा।
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा॥ जय० ॥

आसुर-भाव-विनाशिनि नाशिनि तम-रजनी।
दैवी-सद्गुण-दायिनि हरि-रसिका सजनी॥ जय० ॥

समता त्याग-सिखावनि, हरिमुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी॥ जय० ॥

दया-सुधा-बरसावनि मातु! कृपा कीजै।
हरि-पद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै॥ जय० ॥

श्रीरामायणजी

आरति श्रीरामायनजी की,
कीरति कलित ललित सिय पी की ॥ टेक ॥
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद,
बालमीक बिग्यान-बिसारद।
सुक सनकादि सेष अरु सारद,
बरनि पवनसुत कीरति नीकी ॥ आरति० ॥

गावत बेद पुरान अष्टदस,
छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।
मुनि जन धन संतन को सरबस,
सार अंस संमत सबही की ॥ आरति० ॥

गावत संतत संभु भवानी
अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।
ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी,
कागभुसुंडि गरुड के ही की ॥ आरति० ॥

कलिमल-हरनि बिषय रस फीकी,
सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।
दलन रोग भव मूरि अमी की,
तात मात सब बिधि तुलसी की ॥ आरति० ॥

श्रीसरस्वती-वन्दन

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

माँ सरस्वतीकी आरती

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्गुण, वैभवशालिनि, त्रिभुवन विख्याता॥ जय०॥
चन्द्रवदनि, पद्मासिनि द्युति मङ्गलकारी।
सोहे हंस-सवारी, अतुल तेजधारी॥ जय०॥
बायें कर में वीणा, दूजे कर माला।
शीश मुकुट-मणि सोहे, गले मोतियन माला॥ जय०॥
देव शरण में आये, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, असुर-संहार किया॥ जय०॥
वेद-ज्ञान-प्रदायिनि, बुद्धि-प्रकाश करो।
मोहाज्ञान तिमिर का सत्वर नाश करो॥ जय०॥
धूप-दीप-फल-मेवा—पूजा स्वीकार करो।
ज्ञान-चक्षु दे माता, सब गुण-ज्ञान भरो॥ जय०॥
माँ सरस्वती की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी, सुखकारी ज्ञान-भक्ति पावे॥ जय०॥